Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक- 47

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

3 रबीयुल सानी 1441 हिज्री कमरी 19 नबुव्वत 1399 हिज्री शमसी 19 नवम्बर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आख़िरत पर नज़र रखने वाले हमेशा मुबारक हैं।

इन्सान को यही अनिवार्य है कि आख़िरत पर नज़र रख कर बुरे कामों से तौबा करे,क्योंकि वास्तविक ख़ुशी और सच्चा आन्नद इसी में है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

फरवरी 1898 ई

आख़िरत पर नज़र रखने वाले मुबारक हैं

मैं देखता हूँ कि बावजूद मुसीबतों पर मसीबतें आने के और हर तरफ़ ख़तरा ही ख़तरा दिखाई देने के लोग अभी तक कठोरता और गर्व तथा अंहकार से काम ले रहे हैं। अज्ञान कब तक इस बेफ़िक्री में जीवन व्यतीत करेंगे यहां तक कि लोग हठ नहीं छोड़ते। अपनी बुरी करतूतों से रुकते नहीं और ख़ुदा तआला से मुसालहत (समझौता) नहीं करते,ये बलाऐं और मुसीबतें दूर नहीं होने की। मैंने देखा है और ख़ूब विचार किया है कि अकाल के दिनों में लोगों ने ज़रा भी अकाल की मुसीबत को महसूस नहीं किया। शराबख़ाने इसी तरह आबाद थे और वेश्यावृत्ति और बुरे कामों से बाज़ार बराबर गर्म थे। आरम्भ में जब कोई नाम मात्र का फ़तवा मक्का मदीना के नाम से आ जाया करता था तो लोग डर जाया करते थे और मस्जिदें आबाद हो जातीं थीं, परन्तु इस वक़्त शोख़ी और निर्लज्जता सीमा से बढ़ चली है। अल्लाह तआला ही फज़ल करे।

बुद्धिमान वह है जो अज़ाब आने से पहले उसकी फ़िक्र करता है और दूर-अँदेश वह है जो मुसीबत से पहले इससे बचने की चिन्ता करे।

इन्सान को यही अनिवार्य है कि आख़िरत पर नज़र रखकर बुरे कामों से तौबा करे,क्योंकि वास्तविक ख़ुशी और सच्चा आन्नद इसी में है। यह एक विश्वसनीय बात है कि कोई बुरा काम और गुनाह का काम एक क्षण के लिए भी सच्ची प्रसन्नता नहीं दे सकता। बुरे काम करने वाला, बदमाश को तो हर क्षण भेद के खुल जाने का ख़तरा लगा हुआ है। फिर वह अपने बुरे कर्मों में आन्नद का सामान कहाँ देखेगा। आख़िरत पर नज़र रखने वाले हमेशा मुबारक हैं।

मर्द आख़िर बीं बंदा अस्त

देखो उन क़ौमों का हाल जिन पर समय-समय पर अज़ाब आए। हर एक को यही अनिवार्य है कि यदि दिल सख़्त भी हो तो उसे मलामत करके विनय तथा विनम्रता की शिक्षा दे। रोना यदि नहीं आता तो रोने वाली सूरत बनाए फिर अपने आप आँसू भी निकल आएँगे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 195 से 196 प्रकाशन 2008 कादियान)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

आंहज़रत नमाज़ की एक सुन्दर दुआ

हज़रत मुग़ैरह बिन शुअबः रज़ि के कातिब वर्राद से रिवायत है कि हज़रत मुग़ैरह रज़ि बिन शुअबान ने मुझ से एक ख़त लिखवाया जो हज़रत मुआविया रज़ि की तरफ़ था कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़र्ज़ नमाज़ के बाद कहा करते थे।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

अनुवाद : अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं वह एक है। उसका कोई साझा नहीं उसी की बादशाहत है। और उसी की समस्त प्रशंसाएं हैं। और वह हर बात पर बड़ा ही क़ादिर है। हे अल्लाह कोई रोकने वाला नहीं जो तू दे और कोई देने वाला नहीं जो तू रोक दे। किसी सामर्थ्य वाले को उस का सामर्थ्य तेरे मुक़ाबला पर लाभ नहीं देगा।

(सहीह बुख़ारी भाग 2 किताबुल आज़ान प्रकाशन 2006 ई क़ादियान)

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ एक अनुपमीय दुआ है।

प्रत्येक छोटी बड़ी ज़रूरत के बारे में सांसारिक और धार्मिक प्रत्येक काम के बारे में इस दुआ से लाभ उठाया जा सकता है।

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ की तफसीर में हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं कि

“ इस आयत में ऐसी उच्च और सम्पूर्ण दुआ सिखाई गई है जिस की तुलना नहीं मिलती। यह दुआ किसी विशेष बात के लिए नहीं है बल्कि हर छोटी बड़ी ज़रूरत के बारे में है और धार्मिक और सांसारकि हर काम के बारे में इस दुआ से लाभ उठाया जा सकता है। हर काम चाहे धार्मिक हो या सांसारिक उस के पूरा करने के लिए कोई न कोई तरीक़ होता है यदि इस तरीक़ा को धारण किया जाए तो सफलता होगी वर्ना नहीं होगी। फिर कई बार कई तरीक़े एक काम को करने के नज़र आते हैं। जिनमें से कुछ नाजायज़ होते हैं और कुछ जायज़। जो जायज़ रास्ते होते हैं उनमें से कुछ तो लक्ष्य तक जल्दी पहुंचा देते हैं और कुछ देर से पहुंचाते हैं। اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ की दुआ में हमें यह सिखाया गया है कि हम अल्लाह तआला से दुआ मांगते रहें कि वह हमारा इस ढंग की ओर मार्गदर्शन करे जो अच्छा और नेक हो और जिस पर चल कर हम अपने लक्ष्य में सफल हो जाएं और शीघ्र से शीघ्र सफल हों। कैसी सादा और कैसी सम्पूर्ण यह दुआ है और फिर कैसी व्यापक है। ज़िन्दगी का वह कौन सा लक्ष्य है जिस के बारे में हम इस दुआ को प्रयोग नहीं कर सकते और जो व्यक्ति यह दुआ मांगने का आदी हो वह किस-किस रंग में अपनी मेहनत को अधिक से अधिक सफल करने की कोशिश नहीं करेगा। क्योंकि जिस व्यक्ति को हर वक़त यह याद कराया जाएगा कि हर लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अच्छे तरीक़ भी हैं और बुरे तरीक़े भी हैं और यह कि उसे हमेशा अच्छे तरीक़ा के तलाश करने और धारण करने की कोशिश करनी चाहिए। और फिर अच्छे तरीक़ों में से भी उस तरीक़े को धारण करना चाहिए जो सबसे निकट हो। उस का दिमाग़ किस तरह इस शिक्षा को अपने अन्दर समाहित कर लेगा। ज़ाहिर है कि जो व्यक्ति अल्लाह तआला से दुआ करेगा कि उसे सीधा मार्ग दिखाया जाए उस का दिमाग़ ख़ुद भी इस विचार से प्रभावित होगा और उस की अपनी कोशिश भी अपने सब कामों में ऐसे ही रास्ता की तलाश में ख़र्च होगी और जो शख़्स अपने कामों में इन नियमों को समक्ष

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्रिहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-26)

नमाज़ जनाज़ा हाज़िर तथा ग़ायब, हुज़ूर की बरकतों वाली मौजूदगी में निकाहों का ऐलान, फ़ैमली मुलाक़ातें, भूतपूर्व सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी के सम्मान में आयोजन, आमीन का आयोजन

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

24 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक जुमेरात)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 7 बजे मस्जिद बैयतुल बसीर मह्दी आबाद में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्टें देखीं और उन पत्रों और रिपोर्टों पर अपने मुबारक हाथ से आदेश लिखे। इसी तरह हुज़ूर अनवर की अन्य विभिन्न दफ़्तरी उमूर को पूरा करने में व्यस्तता रही।

नमाज़ जनाज़ा हाज़िर तथा ग़ायब

2 बजे दोपहर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर आदरणीया कुलसूम अख़्तर साहिबा पत्नी आदरणीय बशीर अहमद साहिब मरहूम चक नम्बर 106 रहीम यार ख़ान पाकिस्तान की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर और निम्नलिखित 6 मरहूमीन की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाई।

आदरणीया सलीम अख़्तर साहिबा पत्नी राना मुहम्मद शहबाज़ साहिब रब्वाह पाकिस्तान, आदरणीया अमतुल क़य्यूम साहिबा पत्नी आदरणीय चौधरी मुहम्मद शरीफ़ साहिब(भूतपूर्व नायब वकीलुल माल सानी रब्वाह), आदरणीय मुहम्मद अनवर हाश्मी साहिब मरहूम, आदरणीय अशर्फ़ नज़ीर अहमद साहिब मरहूम, आदरणीया Asma मुमताज़ साहिबा, आदरणीय अख़्तर हुसैन साहिब आफ़ क़ादियान, इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैयतुल बसीर में तशरीफ़ लाकर नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

प्रोग्राम के अनुसार 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में 35 फ़ैमिलीज़ के 114 लोगों और 11 सिंगल लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमलीज़ और लोगों मह्दी आबाद के अतिरिक्त जर्मनी की निम्नलिखित जमाअतों से थे।

Hamburg, Soltau, Bremen, Kiel, Lbeck, Pinneberg, Jesteburg, Reheine, Hannover

इसके अतिरिक्त पाकिस्तान से आने वाले एक दोस्त ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

मुलाक़ात करने वाले इन सभी लोगों और फ़ैमलीज़ ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने स्नेह करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाए। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 8 बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैयतुल बसीर में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाईं।

हुज़ूर की बरकतों वाली मौजूदगी में निकाहों का ऐलान

नमाज़ों की अदायगी के बाद आदरणीय सदाक़त अहमद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी ने निम्नलिखित 4 निकाहों का ऐलान फ़रमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्नेह करते हुए इस दौरान मौजूद रहे।

प्रिया क़ुर्रतुल एन मलिक पुत्री आदरणीय हफ़ीज़ अहमद क़ुरैशी साहिब का निकाह प्रिय रिज़वान मलिक पुत्र आदरणीय अरशद अहमद शहबाज़ साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया नाइला कंवल ख़्वाजा पुत्री आदरणीय शब्बीर अहमद ख़्वाजा साहिब का निकाह प्रिय मिसबाहुद्दीन सैफ़ पुत्र आदरणीय फ़लाहुद्दीन सैफ़ साहिब मरहूम के साथ तय पाया।

प्रिया लुबना तारिक़ पुत्री आदरणीय तारिक़ महमूद साहिब का निकाह प्रिय यासिर अहमद मलिक पुत्र आदरणीय नासिर अहमद मलिक साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया सदफ़ ख़ान पुत्री आदरणीय मीर नसीरुल्लाह ख़ान साहब का निकाह प्रिय अहद जान ख़ान पुत्र आदरणीय ग़ुलामुल्लाह ख़ान साहब के साथ तय पाया।

आख़िर पर स्नेह करते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रि-हिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

मह्दी आबाद को बहुत ख़ूबसूरत झंडियों और रंग बिरंगे बल्बों से सजाया गया है। मस्जिद बैयतुल बसीर और इसके इर्द-गिर्द के क्षेत्र में चिराग़ों का दृश्य देखने योग्य है। यहां नमाज़ों की अदायगी और निवास और खाने के लिए तीन बड़ी मार्कीज़ भी लगाई गई हैं। हर मार्की में एक हज़ार के क़रीब लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। एक मार्की मर्दों के लिए और एक मार्की औरतों के लिए है और एक मार्की में लोगों के खाना खाने का प्रबन्ध किया गया है। सैंकड़ों लोगों और नौजवान ख़ुद्दाम विभिन्न विभागों में डयूटी पर मामूर हैं और बड़े उत्तम तरीका से अपने अपने कर्तव्य अदा कर रहे हैं। लंगर ख़ाना का निज़ाम भी जारी है और दैनिक हज़ारों लोगों का खाना तैय्यार होता है। पार्किंग का प्रबन्ध भी विभिन्न स्थानों पर किया गया है।

मह्दी आबाद का परिचय

मह्दी आबाद हिमबर्ग शहर से 30 किलोमीटर दूरNahe नामी क़स्बा और ज़िलाSegeberg में स्थित है। सूबा का नाम Schleswig-Holstein है और यह सूबा जर्मनी के उत्तर की तरफ़ है इस सूबा की राजधानी Kiel है और यह वही शहर है जिस के एक जर्मन बाशिंदे ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आप की ज़िन्दगी में पहचाना था और आप पर ईमान लाया था।

यह ज़मीन का टुकड़ा जिसका नाम मह्दी आबाद है। 12 जुलाई 1989 को 6 लाख जर्मन मार्क में ख़रीदा गया। मह्दी आबाद 2 ज़मीन के टुकड़ों पर आधारित है। एक टुकड़ा ज़मीन जिस पर जमाअत के सेंटर मौजूद है और अब यहां मस्जिद बैयतुल बसीर बनी है। इसका क्षेत्रफल 21479 वर्ग मीटर आर्थात 5 एकड़ से अधिक है और दूसरा ज़मीन का टुकड़ा जो इस पहले टुकड़ा से 8 सौ मीटर दूर है एक खेती की ज़मीन पर आधारित है और इसका क्षेत्रफल 1 लाख 51 हज़ार वर्ग मीटर है। एकड़ में यह क्षेत्रफल 37.26 एकड़ है। मह्दी आबाद में एक इमारत पहले की बनी हुई है इसके एक हिस्सा को रिहायश के तौर पर और एक हिस्सा के 2 हालों को मुरम्मत इत्यादि करके नमाज़ के लिए प्रयोग किया जा रहा था। यहां मस्जिद की बनाने की आज्ञा के मिलने के लिए एक लंबा समय लगा है और पूरे क्षेत्र का एक Master Plan बना कर प्रस्तुत करना पड़ा है और कई शर्तें के साथ मस्जिद की बनाने की आज्ञा मिली है

यहां मस्जिद की बुनियाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने दौरा जर्मनी के दौरान 14 जून 2011 ई को रखी थी और इस साल 2019 ई में बहुत सी रुकावटों को तय करने के बाद इस मस्जिद का बनाना पूर्ण हुआ है और दिनांक जुम्अः हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस मस्जिद का उद्घाटन फ़रमाएँगे।

25 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक जुमअतुल मुबारक)

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

आज क़ुरआन मजीद के जितनी प्रतियां उपलब्ध हैं वह हज़रत अबी बिन कअब रज़ि की किराअत के अनुसार हैं।

मेरे भाई मुसलमानों को मेरा सलाम पहुंचा देना और मेरी क़ौम और मेरे रिश्तेदारों से कहना कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे पास ख़ुदा तआला की एक बेहतरीन अमानत हैं और हम अपनी जानों से इस अमानत की सुरक्षा करते रहे हैं। अब हम जाते हैं और इस अमानत की सुरक्षा तुम्हारे सपुर्द करते हैं। ऐसा न हो कि तुम उस की सुरक्षा में कमज़ोरी दिखाओ।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबा, जंगे बदर में शहादत का सम्मान पाने वाले हज़रत मुअव्विज़ बिन हारिस और कातिबे वह्य, मुसलमानों के सरदार और उम्मत के सबसे बड़े क़ारी हज़रत उबई बिन कअब रज़ि अल्लाहो अन्हुमा के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 अक्तूबर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ
عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबी का मैं पहले वर्णन करूँगा उनका नाम है हज़रत मुअव्विज़ बिन हारिस रज़ि। हज़रत मऊज़ रज़ि का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज से था। हज़रत मऊज़ रज़ि के पिता का नाम हारिस बिन रिफ़ाइह था। उनकी माता का नाम अफ़रा पुत्री उबय्यद था। हज़रत मआज़ रज़ि और हज़रत औफ रज़ि उनके भाई थे। ये तीनों अपने पिता के साथ-साथ अपनी माता की तरफ़ भी सम्बन्धित थे और उन तीनों को बनू अफरा भी कहा जाता था।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 231 " मुअव्विज़ बिन अफ़रा' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(अत्तबकातुल क़ुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 374 " मुअव्विज़ बिन अफ़रा' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

सिर्फ इब्ने इसहाक़ ने यह वर्णन किया है कि हज़रत मऊज़ रज़ि सत्तर अन्सार के साथ बैअत उक़बा सानिया में शामिल थे। हज़रत मऊज़ रज़ि ने उम्मे यज़ीद पुत्री क़ैस से शादी की। इस शादी से उनके हाँ दो बेटियां पैदा हुईं जिनके नाम हज़रत रुबय्या पुत्री मुअव्विज़ और हज़रत उमैर पुत्री मुअव्विज़ था।

(अत्तबकातुल क़ुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 374 " मुअव्विज़ बिन अफ़रा' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत मऊज़ रज़ि को अपने दोनों भाईयों हज़रत मआज़ रज़ि और हज़रत औफ रज़ि के साथ जंग बदर में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 231 " मुअव्विज़ बिन अफ़रा' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

जंग बदर में हज़रत मआज़ रज़ि , हज़रत औफ रज़ि और हज़रत मऊज़ रज़ि जो बनू अफरा कहलाते थे वे और उनके आज़ाद किए ग़ुलाम अबू हमरा के पास एक ही ऊंट था जिस पर वे बारी-बारी सवार होते थे।

(किताबुल मग़ाज़ी लिल्वाकदी भाग 1 पृष्ठ 38 बदर अलिक़ताल, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया 2013 ई)

यह रिवायत हज़रत मआज़ रज़ि के अन्तर्गत मैं पहले बयान कर चुका हूँ परन्तु यहां हज़रत मऊज़ रज़ि के अन्तर्गत में भी इस का आना ज़रूरी है इसलिए बयान करता हूँ।

हज़रत अनस रज़ि से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग बदर के दिन फ़रमाया कि कौन देखेगा कि अबू जहल की क्या हालत हुई है? हज़रत इब्ने मसूद रज़ि गए और जा कर देखा कि इस को अफरा के दो बेटों ने तलवारों से इतना मारा है कि वह मरने के निकट हो गया है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि ने पूछा क्या तुम अबुजहल हो? हज़रत अनस रज़ि बयान करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने अबुजहल की दाढ़ी पकड़ी। अबुजहल कहने लगा क्या तुमने इस से बड़े किसी आदमी को क़तल किया है या यह कहा कि इस को इस की क़ौम ने क़त्ल किया हो? इस जैसे बड़े आदमी को कभी उनकी क़ौम ने क़तल किया हो?

(सही अल-बुख़ारी किताबुल अलमग़ाज़ी बाब क़तल उबय्य जहल हदीस नम्बर 3962)

यह बुख़ारी की रिवायत है। इस की व्याख्या में हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब बयान करते हैं कि कुछ रिवायतों में है कि अफरा के दो बेटों मुअविज़ रज़ि और मआज़ रज़ि ने अबुजहल को मौत के क़रीब पहुंचा दिया था। बाद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि ने उस का सिर तन से जुदा किया था। इमाम इब्ने हिज्र ने इस शंका को प्रकट किया है कि हज़रत मआज़ बिन अमरो रज़ि और हज़रत मआज़ बिन अफरा रज़ि के बाद हज़रत मऊज़ बिन अफरा रज़ि ने भी इस पर वार किया होगा।

(उद्धरित सही बुख़ारी किताब फ़र्ज़ अलख़ामिस बाब मन लम यख़मस अलअसलाब.... हदीस 3141 भाग 5 पृष्ठ 491 हाशिया, उर्दू अनुवाद प्रकाशन नज़ारत इशाअत रब्वा)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने अबू जहल के क़तल की घटना को बयान करते हुए बयान फ़रमाया कि इन्सान बड़ी ख़ुशियां करता है और अपने लिए एक चीज़ को लाभदायक ख़्याल करता है परन्तु वही उसके लिए तबाही और बर्बादी का कारण हो जाती है। बदर के अवसर पर मक्का के कुफ़्फ़ार जब आए तो उन्होंने समझा कि बस हमने मुसलमानों को मार लिया और अबुजहल ने कहा हम ईद मनाएंगे और ख़ूब शराबें उड़ाएंगे और समझा कि बस अब मुसलमानों को मार कर ही पीछे हटेंगे परन्तु इसी अबुजहल को मदीना के दो लड़कों ने क़त्ल कर दिया। मक्का के कुफ़्फ़ार मदीना वालों को बड़ा अपमानित ख़्याल करते थे और उसे अर्थात अबुजहल को ऐसी हसरत देखनी नसीब हुई कि उस की अन्तिम इच्छा भी पूरी न हो सकी। अरब में रिवाज था कि जो सरदार होता वह अगर लड़ाई में मारा जाता तो उस की गर्दन लंबी कर के काटते ताकि पहचाना जाए कि यह कोई सरदार था। अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने उसे देखा जब यह बिना हरकत के और ज़ख़्मी पड़ा हुआ था और पूछा कि तुम्हारी क्या हालत है? उसने कहा मुझे और तो कोई अफ़सोस नहीं, सिर्फ यह है कि मुझे मदीना के दो अराईं बच्चों ने मार दिया अर्थात ऐसे बच्चों ने जो सब्ज़ियां उगाने वालों की, खेती बाड़ी करने वालों की सन्तान हैं और मक्का वालों की नज़र में यह काम कम दर्जे का समझा जाता था और ख़्याल किया जाता था कि मदीना के लोगों को जंग तथा लड़ाई और जंग और युद्ध का क्या पता? परन्तु मारा भी और उस के उस गर्व को तोड़ा भी तो किस ने? इन्हीं लोगों ने। न केवल उन लोगों ने बल्कि उनके बच्चों ने या लड़कों ने जो इतने अनुभवी नहीं थे। अब्दुल्लाह ने पूछा क्या कि तुम्हारी कोई इच्छा है? उसने कहा मेरी यह इच्छा है कि मेरी गर्दन ज़रा लम्बी कर के काट दो। उन्होंने कहा मैं तेरी यह इच्छा भी पूरी नहीं होने दूँगा और इस की गर्दन को ठोढ़ी के पास से सख़्ती से काट दिया और वह जो ईद मनानी चाहता था वही उस के लिए मातम हो गया और वह शराब जो उसने पी थी उसे हज़्म होनी भी नसीब न हुई।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद (ख़ुतबाते ईदुल फ़ितर) भाग 1 पृष्ठ 11)

जंग बदर के अवसर पर हज़रत मऊज़ रज़ि लड़ते लड़ते शहीद हो गए। आप

को अबू मुसाफ़िअ ने शहीद किया था।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफतुल असहाब भाग 4 पृष्ठ 1442 " मुअव्विज़ बिन अफ़रा' दारुल जैल बेरूत 1992 ई)

अगला वर्णन जिन सहाबी का है उनका नाम है हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि। हज़रत उबय्य रज़ि अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू मुआविया से थे। हज़रत उबय्य रज़ि के पिता का नाम कअब बिन क़ैस और माता का नाम सुहैलह पुत्री असवद था। हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि की दो कुनिय्यतें थीं एक अबू मुंज़िर जो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रखी और दूसरी अबू तुफ़ैल जो हज़रत उमर रज़ि ने उनके बेटे तुफ़ैल के कारण से रखी थी।

(उसदुल ग़ाबह,भाग 1 पृष्ठ 169-168 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2016 ई)

हज़रत उबय्य रज़ि मध्य क़द के थे। हज़रत उबय्य रज़ि के सिर और दाढ़ी का रंग सफ़ेद था। ख़िज़ाब के माध्यम से अपना बुढ़ापा तब्दील नहीं करते थे। (तबक़ात अलकुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 378 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई) अर्थात बालों को या दाढ़ी को रंग नहीं लगाते थे। हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि सत्तर लोग के साथ बैअत उक़बा सानिया में शामिल थे। हज़रत उबय्य रज़ि इस्लाम से पहले भी लिखना पढ़ना जानते थे और इस्लाम के बाद हज़रत उबय्य रज़ि को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होने वाली वह्य लिखने की सआदत नसीब हुई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबय्य रज़ि और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह के बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाया था जबकि दूसरी रिवायत के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबय्य रज़ि और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि के मध्य भाईचारा क़ायम फ़रमाया था।

(तबक़ात कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 378 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि के बारे में आता है कि अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि वह उबय्य रज़ि को क़ुरआन पढ़ कर सुनाएँ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत के सबसे बड़े क़ारी हैं।

(तबक़ात अलकुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 378 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

और इसी कारण से उनके बारे में यही आता है कि उनको क़ुरआन का बहुत ज्ञान था और आगे और भी इस बारे में रिवायतें आएंगी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि अल्लाह तआला अन्हो उन चार आदमियों में से थे जिनके बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि ये उम्मत के क़ारी हैं अर्थात यदि किसी ने क़ुरआन सीखना हो तो उनसे सीखे।

(उद्धरित अज़ तफ़सीर कबीर भाग 10 पृष्ठ 84)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि बयान फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिन क़ातिबों को क़ुरआन करीम लिखवाते थे उनमें से निम्नलिखित 15 नाम इतिहास से प्रमाणित हैं। ज़ैद बिन साबित रज़ि, उबय्य बिन कअब रज़ि, अब्दुल्लाह बिन सअद बिन उबय्य सरह, ज़ुबैर बिन अल्अवाम रज़ि , ख़ालिद बिन सईद बिन अल-आस रज़ि, अबान बिन सईद अल-आस रज़ि, हंज़ला बिन अलर्रबीअ अल्असदी, मुऐयकिब बिन बिन उबय्य फ़ातिमा रज़ि, अब्दुल्लाह बिन अर्क़म अज़्ज़ुहरी रज़ि, शुरजील बिन हसना रज़ि, अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि, हज़रत अबू बकर रज़ि, हज़रत उमर रज़ि, हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत अली रज़ि। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल होता तो आप उन लोगों में से किसी को बुला कर वह्य लिखवा देते थे।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 425-426)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने एक जगह फ़रमाया कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन पढ़ाने वाले उस्तादों की एक जमात निर्धारित फ़रमाई थी जो सारा क़ुरआन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हिफ़्ज़ कर के आगे लोगों को पढ़ाते थे। ये चार चोटी के उस्ताद थे जिनका काम यह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क़ुरआन शरीफ़ पढ़ें और लोगों को क़ुरआन पढ़ाएें। फिर उनके अधीन और बहुत से सहाबा रज़ि ऐसे थे जो लोगों को क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाते थे। इन चार बड़े उस्तादों के नाम ये हैं।(1) अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि, (2) सालिम मौला उबय्य हुज़ैफ़ह रज़ि, (3) मआज़ बिन जबल रज़ि,(4)उबय्य बिन कअब रज़ि। उनमें से पहले दो मुहाजिर हैं और दूसरे दो अन्सारी। कामों के लिहाज़ से अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि एक मज़दूर थे, सालिम रज़ि एक आज़ाद किए ग़ुलाम थे, मआज़ बिन जबल रज़ि और उबय्य बिन कअब रज़ि मदीना के रईसों में से थे। मानो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समस्त गिरोहों को समक्ष रखते हुए हर गिरोह में से क़ारी निर्धारित कर दिए थे। हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे

خُذُوا الْقُرْاٰنَ مِنْ اَرْبَعَةٍ (مِنْ) عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ وَ سَالِمٍ وَ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ وَ اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ۔

जिन लोगों ने क़ुरआन पढ़ना हो वह इन चार से क़ुरआन पढ़ें। अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि, सालिम रज़ि, मुआज़ बिन जबल रज़ि और उबय्य बिन कअब रज़ि। ये चार तो वे हैं जिन्हों ने सारा क़ुरआन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सीखा या आप को सुना कर उस को ठीक करा लिया परन्तु उनके इलावा भी बहुत से सहाबा रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सीधे भी कुछ न कुछ क़ुरआन सीखते थे।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 427-428)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबय्य रज़ि को फ़रमाया अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें सूरह

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتَابِ۔

पढ़ कर सुनाऊँ। हज़रत उबय्य रज़ि ने पूछा क्या मेरा नाम लिया था? आप ने फ़रमाया हाँ। हज़रत उबय्य रज़ि यह सुन कर रो पड़े। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सही बुख़ारी किताब मनाक़िब अल-अनसार बाब मनाक़िब उबय्य बिन कअब हदीस नम्बर 3809)

जबकि एक दूसरी रिवायत में वर्णन है कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि से फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें क़ुरआन पढ़ कर सुनाऊँ। हज़रत उबय्य रज़ि ने पूछा क्या अल्लाह ने आप से मेरा नाम लिया है? आप ने फ़रमाया हाँ। हज़रत उबय्य रज़ि ने निवेदन किया: दोनों संसारों के पालने वाले के हाँ मेरा ज़िक्र हुआ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। इस पर हज़रत उबय्य रज़ि की आँखों में आँसू आ गए।

(सही बुख़ारी किताबुल तफ़सीर बाब सूर लम यकुन, हदीस नम्बर 4961)

इस घटना का विस्तृत वर्णन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने भी अपने शब्दों में इस तरह बयान फ़रमाई है। आप फ़रमाते हैं कि "अबू हय्यह् बदरी से रिवायत है कि जब सूर لَمْ يَكُنْ सब की सब नाज़िल हुई है (अर्थात यह इकट्ठी नाज़िल हुई है तो जिब्राईल ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि अल्लाह तआला ने आपको हुक्म दिया है कि यह सूरत उबय्य बिन कअब रज़ि को याद करा दें। इस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि से कहा कि जिब्राईल ने मुझे हुक्म दिया है अर्थात ख़ुदा तआला का यह हुक्म मुझे पहुंचाया है कि मैं यह सूरत तुम को याद करा दूं। उबय्य बिन कअब रज़ि ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह मेरा भी ख़ुदा तआला के हुज़ूर में वर्णन आया था? आप ने फ़रमाया हाँ। इस पर उबय्य बिन कअब रज़ि ख़ुशी के मारे रो पड़े।"

(तफ़सीर कबीर भाग 8 पृष्ठ 342)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत उम्र फ़ारूक रज़ि ने इस वाक्य की याद को कई बार ताज़ा किया। एक बार मस्जिद नब्वी के मेम्बर पर कहा कि सबसे बड़े क़ारी उबय्य रज़ि हैं। शाम के मशहूर सफ़र में जाबिया स्थान, यह जाबिया दमिशक़ के इलाक़े की एक बस्ती का नाम है,वहां उस के ख़ुत्बा में फ़रमाया कि

مَنْ اَرَادَ الْقُرْآنَ فَلْيَاْتِ اُبَيًّا۔

अर्थात जिस को क़ुरआन का ज़ौक़ हो वह उबय्य रज़ि के पास आए।

(सैरुस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 149 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची (मुअजमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 91)

हज़रत अनस रज़ि से रिवायत है कि चार व्यक्तियों ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम के ज़माना में क़ुरआन सारे का सारा हिफ़्ज़ किया था। ये सब अन्सारी थे। हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि ,हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि, हज़रत अबू ज़ैद रज़ि और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि। यह बुख़ारी की हदीस है।

(सही बुख़ारी किताब मनाक़िब अल-अन्सार बाब मनाक़िब ज़ैद बिन साबित हदीस नम्बर 3810 अनुवाद भाग 7 पृष्ठ 290 प्रकाशन नज़ारत इशाअत रब्वा)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि "अन्सार में से जो मशहूर हुफ़्फ़ाज़ थे उनके नाम ये हैं। उबादा बिन सामित रज़ि, मआज़ रज़ि, मुजम्मिअ बिन हारिसह रज़ि, फ़ज़लह बिन उबैद रज़ि, मसलमा बिन मुख़ल्लद रज़ि, अबू दर्दा रज़ि, अबू ज़ैद रज़ि, ज़ैद बिन साबित रज़ि, उबय्य बिन कअब रज़ि, सअद बिन उबादह रज़ि और उम वरक़ह रज़ि।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 430)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत पर सबसे ज़्यादा मेहरबान हज़रत अबूबकर रज़ि हैं और ख़ुदा के धर्म के बारे में सबसे ज़्यादा सख़्त हज़रत उमर रज़ि हैं, अर्थात उनमें उसूलों की बड़ी सख़्ती है और लज्जा में सबसे ज़्यादा कामिल हज़रत उस्मान रज़ि हैं। लज्जा के उच्च स्तर पर पहुंचे हुए हज़रत उस्मान रज़ि हैं और हलाल तथा हराम का सबसे ज़्यादा इल्म रखने वाले हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि हैं और फ़राइज़ के सबसे ज़्यादा जानने वाले हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि हैं और क़िरअत के सबसे ज़्यादा जानने वाले हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि हैं और हर उम्मत का एक अमीन होता है और इस उम्मत के अमीन हज़रत अबू उबैयदा बिन जर्राह रज़ि हैं। (जामा तिरमिज़ी अबवाब अलुमिना कब बाब मनाक़िब मआज़ बिन जबल...हदीस3790) जिनका ज़िक्र पहले हो चुका है हज़रत अबू उबय्यदा का

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मदीना तशरीफ़ लाने पर सबसे पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वह्य लिखने वाले हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि ही थे। इस ज़माना में किताब या क़ुरआन के अन्त में कातिब का नाम लिखने का नियम नहीं था। सबसे पहले हज़रत उबय्य रज़ि ने इस का आरम्भ किया। बाद में अन्य बुज़ुर्गों ने भी इस का अनुकरण किया।

(उसदुल ग़ाबह भाग 1पृष्ठ 170 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत2016)

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 158 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

अर्थात लिखने वाले का नाम नहीं लिखा जाता था केवल किताबत की जाती थी। हज़रत उबय्य रज़ि ने इस काम को शुरू किया कि लिखने के बाद आख़िर में अपना नाम लिख दिया कि यह मैं ने लिखा है इस के बाद फिर यह तरीक़ा नियमित प्रचलित हो गया।

हज़रत उबय्य रज़ि ने क़ुरआन का एक एक शब्द रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक मुंह से सुन कर याद कर लिया था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उनके शौक़ को देखकर उनकी शिक्षा की तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाते थे। नबुव्वत का रोब बड़े बड़े सहाबा को सवाल करने से रोकता था, परन्तु हज़रत उबय्य रज़ि बिना झिजक जो चाहते थे सवाल करते थे। अर्थात यह नहीं कि बेतुके सवाल करते थे। एक जो नबुव्वत का रोब है इस के और मुक़ाम की सीमा के अन्दर रहते हुए जिस तरह सवाल करना चाहिए उस तरह सवाल करते थे परन्तु झिजक नहीं थी। उनके शौक़ को देखकर कई बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद आरम्भ फ़रमाते थे और बिना पूछे भी बता देते थे।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 148 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। इस में एक आयत पढ़ना भूल गए। हज़रत उबय्य रज़ि नमाज़ में शुरू से सम्मिलित नहीं हुए थे बल्कि मध्य में शरीक हुए थे। नमाज़ ख़त्म कर के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों से पूछा कि किसी ने मेरी किराअत पर ध्यान दिया था? समस्त लोग ख़ामोश रहे। फिर पूछा उबय्य बिन कअब हैं? हज़रत उबय्य रज़ि उस वक़्त तक नमाज़ ख़त्म कर चुके थे। शायद दूसरी रकअत पढ़ी होगी जो यह ग़लती हुई होगी या भूल हुई होगी या आयत को भूले होंगे जिसको हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि ने बाद में शामिल होने के बाद बहरहाल सुन लिया था। उबय्य नमाज़ ख़त्म कर चुके थे परन्तु बोले कि आप ने अमुक़ आयत नहीं पढ़ी। उन्होंने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल !ठीक है आप ने तिलावत में अमुक़ आयत नहीं पढ़ी। क्या ये मंसूख़ हो गई है या आप पढ़ना भूल गए थे? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं, मैं पढ़ना भूल गया था। इस के बाद फ़रमाया कि मैं जानता था। हज़रत उब्बय रज़ि को सम्बोधित कर के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं जानता था कि तुम्हारे सिवा और किसी को इधर ख़्याल नहीं हुआ होगा।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 148 प्रकाशन दारुल इशाअत ,उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि बयान करते हैं कि मैं मस्जिद में था। एक आदमी अन्दर आया और नमाज़ पढ़ने लगा। फिर उसने ऐसी क़िराअत की जो मुझे ऊपरी लगी। फिर एक और आदमी अन्दर आया उसने अपने साथी की किराअत से विभिन्न क़िरअत की। फिर जब हम नमाज़ पढ़ चुके तो हम सब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। मैं ने निवेदन किया कि इस व्यक्ति ने ऐसी क़िराअत में क़ुरआन पढ़ा है जो मुझे ऊपरी लगी। फिर दूसरा व्यक्ति आया उसने अपने साथी की क़िरअत से विभिन्न क़िरअत की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दोनों को इरशाद फ़रमाया कि अच्छा। कहा अब मुझे पढ़ के सुनाओ। इन दोनों ने क़िरअत की। क़ुरआन करीम पढ़ कर सुनाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके पढ़ने को ठीक क़रार दिया। दोनों को कहा कि तुम दोनों ठीक हो। अपनी राय के रद्द पर हज़रत उब्बय रज़ि कहते हैं कि मैं ने जो राय क़ायम की थी कि उसने ग़लत पढ़ा है इसको जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रद्द कर दिया और दोनों को सही क़रार दे दिया तो मैं बहुत लज्जित हुआ जो जाहलियत में भी न हुआ था जब मुझे कुछ भी नहीं पता था। ऐसी लज्जा उस समय मुझे हुई कि कभी ज़िन्दगी में नहीं हुई। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस हालत को देखा जो मुझ पर छाई हुई थी, लज्जा की अवस्था चेहरे से प्रकट हो गई होगी , तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे सीने पर हाथ मारा। मैं पसीने में गीला था मानो कि मैं डर की हालत में प्रताप वाले अल्लाह को देख रहा था तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया कि उबय्य !मुझे पैग़ाम भिजवाया गया कि मैं क़ुरआन को एक क़िरअत में पढ़ूं। मैं ने इस का जवाब दिया कि मेरी उम्मत के लिए आसानी पैदा कर दे। अत: उसने मुझे दूसरी बार यह जवाब दिया कि मैं उसे अर्थात क़ुरआन को दो क़िरअतों में पढ़ूं। फिर मैं ने निवेदन किया कि मेरी उम्मत के लिए आसानी फ़र्मा दे। फिर उसने तीसरी बार मुझे जवाब दिया कि उसे सात क़िरअतों पर पढ़ लो। अत: हर सवाल के बदले जिसका मैं ने तुझे जवाब दिया है एक दुआ का तुझे हक़ दिया गया है अर्थात उस फ़रिश्ते ने कहा। जिब्राईल ने कहा अल्लाह तआला का यह पैग़ाम है कि हर क़िरअत के बदले दुआ का हक़ दिया गया है। जो तू मुझसे मांग सकता है तब मैं ने निवेदन किया, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़र्मा रहे हैं कि तब मैं ने निवेदन किया कि अल्लाह !मेरी उम्मत को बख़्श दे। हे अल्लाह मेरी उम्मत को बख़्श दे। और तीसरी दुआ मैं ने उस दिन के लिए छोड़ रखी है जिस दिन सारी सृष्टि मेरी तरफ़ रग़बत करेगी यहां तक कि इब्राहीम भी।

(सही मुस्लिम किताब सलातुल मसाफ़ेरीनव कसरहा बाब बयान इन्नल क़ुरआन ...., अनुवादक नूर फाउंडेश्न भाग 3 पृष्ठ 308-309)

हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि को क़िरअत के फन में जो कमाल प्राप्त था उस का अंदाज़ा इस से हो सकता है कि ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे क़ुरआन का दौरा करवाते थे। अत: जिस साल आप ने वफ़ात पाई हज़रत उबय्य रिज़ को क़ुरआन सुनाया और फ़रमाया मुझसे जिब्राईल ने कहा था कि उबय्य रज़ि को क़ुरआन सुना दीजिए।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 149 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबय्य को क़ुरआन सुनाया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक ज़माना में हज़रत उबय्य रज़ि एक ईरानी को क़ुरआन पढ़ाते थे। जब उस को आयत पढ़ाई

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ طَعَامُ الْأَثِيمِ

तो इस से "असीम" का उच्चारण न होता था। ईरानी का उच्चारण था। वह "से" के शब्द को सही तरह अदा नहीं कर सकता था। हर बार जब यह असीम कहते तो वह यतीम कह देता था। हज़रत उबय्य रज़ि बहुत परेशान थे कि किस

तरह उस को सिखाओं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वहां से गुज़र हुआ और उनकी परेशानी देखकर ठहर गए और जब यह बात सुनी तो ईरानी भाषा में फ़रमाया उसे यह कहो कि طَعَامُ الظَّالِمِ यह ज़े से। उसने जब इस तरह उस को कहा तो उसने साफ़ तौर पर अदा कर दिया और असीम कह दिया। उन्होंने ज़ासिम् कहा था तो उसने असीम कह दिया और सही उच्चारण अदा कर दिया। इस पर आप ने हज़रत उबय्य रज़ि से फ़रमाया कि इस की ज़बान दरुस्त करो। जिस तरह उस की ज़बान है इस ज़बान में इस को बताऊ ताकि वह सही उच्चारण से क़ुरआन करीम पढ़ सके और इस से हर्फ़ निकलवाओ, ख़ुदा तुम्हें इस का बदला देगा।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 152 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुम्अ: के दिन ख़ुत्बा दे रहे थे और सूरह बराअत की तिलावत फ़रमाई। यह सूरह हज़रत अबू दर्दा रज़ि और अबू ज़रा को मालूम न थी। ख़ुत्बा के मध्य में हज़रत उबय्य रज़ि से इशारा से पूछा कि यह सूरत कब नाज़िल हुई है? मैं ने तो अब तक नहीं सुनी थी। हज़रत उबय्य रज़ि ने इशारे से कहा ख़ामोश रहो। नमाज़ के बाद जब अपने घर जाने के लिए उठे तो दोनों बुज़ुर्गों ने हज़रत उबय्य रज़ि से कहा कि तुमने हमारे सवाल का जवाब क्यों नहीं दिया था? जवाब में उबय्य रज़ि ने कहा आज तुम्हारी नमाज़ बेकार हो गई है और वह भी केवल एक बेकार हरकत के कारण से। यह सुनकर वे लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे और बयान किया कि उबय्य रज़ि ऐसा कहते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "सच्च कहते हैं।" अर्थात ख़ुत्बे में तुम्हें बोलना नहीं चाहिए था।

(सैरुस्सहाब: भाग 3पृष्ठ 157 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत उबय्य बन कअब रज़ि बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अबू मुंज़िर! क्या तुम्हें पता है कि अल्लाह की किताब में जो तुम्हारे पास है सबसे महान आयत कौन सी है? हज़रत उबय्य रज़ि कहते हैं मैं ने निवेदन किया अल्लाह और उस का रसूल बेहतर जानते हैं। आप ने दोबारा पूछा और फ़रमाया हे मन्ज़र! क्या तुम जानते हो कि अल्लाह की किताब में जो तुम्हारे पास है सबसे महान आयत कौन सी है? वह कहते हैं जब दोबारा पूछा तो इस पर फिर मैंने कहा कि

اَللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ

वह कहते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया अल्लाह की कसम हे अबू मन्ज़र ज्ञान तुम्हें मुबारक हो।

(सही मुस्लिम किताबुस्सलात अल-मुसाफ़ेरीन व कसरोहा बाब फ़ज़ल सूरह अलकहफ़ व आयतल कुर्सी, अनुवाद नूर फाऊंडेशन भाग 3 पृष्ठ 300)

आप ने फ़रमाया ठीक है। इस बात को, जवाब को पसन्द किया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र ज़माना में हज़रत उबय्य रज़ि ने हज़रत तुफ़ैल बिन अमरो दौसी को क़ुरआन पढ़ाया था। उन्होंने एक कमान तोहफा में पेश की। हज़रत उबय्य रज़ि उस को लगा कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि यह कहाँ से लाए हो? हज़रत उबय्य रज़ि ने कहा कि एक शागिर्द का तोहफा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस को वापस कर दो। भविष्य में ऐसे तोहफा से परहेज़ करना। इसी तरह एक शागिर्द ने कपड़ा तोहफा में पेश किया इस में भी यही अवस्था सम्मुख आई। इसलिए बाद में इन बातों से पूर्ण रूप से दूरी कर ली अर्थात क़ुरआन पढ़ाने के बदला में कोई तोहफा नहीं लेना। सीरिया के लोग जब आप से क़ुरआन मजीद पढ़ते और मदीना के क़ातिबों से लिखवाते भी थे और किताबत का बदला इस तरह अदा होता था कि शाम के लाग अपने साथ क़ातिबों को खाने में शरीक कर लिया करते थे। बदला यह होता था कि अपने साथ खाना खिला दिया परन्तु हज़रत उबय्य रज़ि एक वक़्त भी उनकी दावत मन्ज़ूर न करते थे। हज़रत उमर रज़ि ने एक दिन उनसे पूछा कि सीरिया का खाना कैसा होता है? हज़रत उबय्य रज़ि ने कहा में उनके हाँ खाना नहीं खाता मैं तो अपना ही खाता हूँ।

(सैरुस्सहाब: भाग 3पृष्ठ 152-151 प्रकाशन दारुल इशाअत, उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत उबय्य रज़ि जंग बदर, अहद , ख़ंदक़ और अन्य समस्त जंगों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित रहे।

(तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 378 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

जंग उहद में एक तीर आप की रग पर लगा, ऐसी मेन (main) रग जिसको medium vein कहते हैं जो सिर,सीने, पीठ और हाथ पांव इत्यादि तक ख़ून पहुंचाती है। उस पर लगा तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक हक़ीम भेजा, ईलाज करने वाले को भेजा जिसने रग काट दी। फिर उस रग को अपने हाथ से दाग़ दिया।

(सैरुस्सहाब: भाग 3पृष्ठ 141-142 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

(उर्दू कोष भाग 22 पृष्ठ 29 उर्दू लुग़त बोर्ड कराची (कुहल Lexicon under word)

जंग उहद की एक घटना जो पहले भी बयान हो चुकी है ,संक्षिप्त में यहां भी वर्णन कर देता हूँ। जंग के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि को फ़रमाया कि जाओ और ज़ख़्मियों को देखो। वह देखते हुए हज़रत सअद बिन रबी रज़ि के पास पहुंचे जो सख़्त ज़ख़्मी थे और आख़िरी सांस ले रहे थे। उन्होंने उनसे कहा कि अपने घर वालों और रिश्तेदारों को यदि कोई पैग़ाम देना हो तो मुझे दे दें। हज़रत सअद रज़ि ने मुस्कुराते हुए कहा कि मैं प्रतीक्षा कर रहा ही था कि कोई मुसलमान इधर आए तो पैग़ाम दूं। फिर कहने लगे कि मेरे हाथ में हाथ दो और वादा करो कि मेरा पैग़ाम ज़रूर पहुंचा दोगे। और पैग़ाम क्या था। वह यह था कि ! मुसलमानों को मेरा सलाम पहुंचा देना और मेरी क़ौम और मेरे रिश्तेदारों से कहना कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे पास ख़ुदा तआला की एक बेहतरीन अमानत हैं और हम अपनी जानों से इस अमानत की सुरक्षा करते रहे हैं। अब हम जाते हैं और इस अमानत की सुरक्षा तुम्हारे सपुर्द करते हैं। ऐसा न हो कि तुम उस की सुरक्षा में कमज़ोरी दिखाओ।

(उद्धरित अज़ तफ़सीर कबीर भाग 7 पृष्ठ 338)

9 हिज्री में जब ज़कात फ़र्ज़ हुई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सदक़ों के लेने के लिए अरब के प्रान्तों में उम्माल रवाना फ़रमाए तो हज़रत उबय्य रज़ि क़बीला बनू बिल्ली बनू अज़र और बनू सअद में सदक़ा के आमिल निर्धारित हो कर गए। एक बार हज़रत उबय्य रज़ि एक गांव में गए तो एक व्यक्ति ने सारे जानवर ला कर सामने खड़े कर दिए कि उनमें से ज़कात के तौर पर जिसको चाहें चुन ले। हज़रत उबय्य रज़ि ने ऊंटों में से दो वर्ष का एक बच्चा चुना। सदक़ा देने वाले ने कहा कि इस के लेने से क्या लाभ? न तो यह दूध दे सकता है न सवारी के योग्य है। अगर आप लेना चाहते हैं तो यह ऊंटनी हाज़िर है। मोटी ताज़ी भी है और जवान भी है। हज़रत उबय्य रज़ि ने कहा कि यह कभी नहीं होगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिदायत के ख़िलाफ़ मैं नहीं कर सकता। इस से यह बेहतर है कि तुम मेरे साथ चलो। मदीना यहां से कुछ दूर नहीं है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाते हैं आप जो इरशाद फ़रमाएँगे उस का अनुकरण करना। वह उस पर राज़ी हो गया और हज़रत उबय्य रज़ि के साथ ऊंटनी लेकर मदीना आया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने सारा क़िस्सा दुहराया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारी इच्छा यही है तुम बड़ी ऊंटनी देना चाहते हो तो तुम ऊंटनी दे दो स्वीकार कर ली जाएगी और ख़ुदा तुमको उस का बदला देगा। वह ऊंटनी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश कर के वापस चला गया।

हज़रत अबू बकर रज़ि के ज़माना में क़ुरआन मजीद के क्रम और संकलन का काम शुरू हुआ। सहाबा की जो जमाअत इस सेवा पर लगाई गई हज़रत उबय्य रज़ि उस के निगरान थे। वह क़ुरआन के शब्दों को बोलते थे और लोग उनको लिखते जाते थे। यह जमाअत चूँकि ज्ञान वाले लोगों पर आधारित थी इस लिए

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

किसी किसी आयत पर वार्तालाप और मुबाहसा भी होता रहता था। अत: जब सूरह तौब: की आयत कि

ثُمَّ انْصَرَفُوْا صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ

लिखी गई तो लोगों ने कहा कि यह सबसे अन्त में नाज़िल हुई थी। हज़रत उबय्य रज़ि ने कहा नहीं। इस के बाद दो आयतें मुझे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पढ़ाई थीं। यह आख़िरी नहीं बल्कि यह आख़िरी दो आयतों से पहले है।

(सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 142 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत उमर रज़ि ने अपने ख़िलाफ़त के ज़माना में सैंकड़ों लाभदायक बातों की वृद्धि फ़रमाई जिसमें एक मज्लिस शूरा की स्थापना भी थी। इस्लाम में मज्लिस शूरा की स्थापना हज़रत उमर रज़ि के ज़माना में हुआ। यह मज्लिस अन्सार और मुहाजिरीन के बड़े बड़े सहाबा पर आधारित थी जिनमें क़बीला ख़ज़रज की तरफ़ से हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि भी मेंबर भी थे।

(सैरुस्सहाब: भाग 3पृष्ठ 142-143 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

एक व्यक्ति जिनका नाम जाबिर या जोवैबर था वर्णन करते हैं कि मैं हज़रत उम्र रज़ि के ख़िलाफ़त के ज़माना में अपने किसी काम के लिए आप के पास हाज़िर हुआ। हज़रत उमर रज़ि के पहलू में एक व्यक्ति खड़ा था जिसके बाल और कपड़े सफ़ेद थे। उसने कहा अवश्य इस दुनिया में हमारे लिए लक्ष्य तक पहुंचने के माध्यम और आख़िरत के लिए रास्ते के साधन मौजूद है और इसी में हमारे वे कर्म हैं जिनका बदला हमें आख़िरत में मिलेगा। जाबिर कहते हैं कि मैं ने पूछा हे अमीरुल मोमिनीन! यह कौन हैं? हज़रत उमर रज़ि ने जवाब दिया कि यह मुसलमानों के सरदार उबय्य बिन कअब रज़ि हैं।

(तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 378- 379 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

अब्दुर्रहमान बिन अबद क़ारी से रिवायत है कि मैं रमज़ान की एक रात हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि के साथ मस्जिद की तरफ़ निकला तो क्या देखते हैं कि लोग अलग-अलग गिरोहों में बटे हुए हैं। कोई व्यक्ति अपने तौर पर अकेले नमाज़ पढ़ रहा है और कोई व्यक्ति ऐसे तौर पर नमाज़ पढ़ रहा है कि उस के अनुकरण में कुछ लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं तो हज़रत उमर रज़ि ने कहा मैं समझता हूँ कि अगर उनको एक ही क़ारी के अनुकरण में इकट्ठा कर दो तो यह बेहतर होगा। फिर उन्होंने पुख़्ता इरादा कर लिया और हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि के अनुकरण में उन्हें इकट्ठा किया।

(सही बुख़ारी किताबुस्सलात अत्तरावीह बाब फ़ज़्ल मन काम रमज़ान हदीस नम्बर 2010 अनुवाद भाग 3 पृष्ठ 680-681 प्रकाशित नज़ारत इशाअत रब्वा) अर्थात उस वक़्त वे रात को नफ़्ल पढ़ रहे होंगे।

हज़रत उबय्य रज़ि उन बुज़ुर्गों में से हैं जिन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हदीसों का बहुत बड़ा हिस्सा सुना था। यही कारण है कि बहुत से सहाबा दर्स हदीस में आप की शागिर्दी धारण कर चुके थे। अत: उनके हलक़ा ताबईन से ज़्यादा सहाबा का इकट्ठ होता था। सहाबा भी आप से हदीसें सुना करते थे। हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि, हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि, हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि, हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि, हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि, हज़रत सहल बिन सअद रज़ि ,हज़रत सुलेमान बिन सर्द रज़ि ये सब भी हज़रत उबय्य रज़ि से हदीस के ज्ञान में लाभान्वित होते थे।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 153 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत क़ैस बिन उबादह रज़ि मदीना में सहाबा से मिलने आए। उनका बयान है कि मैं ने हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि से बढ़कर किसी को न पाया। नमाज़ का वक़्त था। लोग जमा थे और हज़रत उमर रज़ि भी तशरीफ़ रखते थे। किसी चीज़ की शिक्षा देने की ज़रूरत थी। नमाज़ ख़त्म हुई तो हज़रत उबय्य रज़ि उठे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस लोगों तक पहुंचाई। ज़ौक़ तथा शौक़ की यह अवस्था थी कि समस्त लोग पूरे ध्यान से सुन रहे थे। क़ैस पर हज़रत उबय्य रज़ि की इस शान अज़्मत का बड़ा प्रभाव हुआ।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 154 प्रकाशन दारुल इशाअत, उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत उमर रज़ि के पास एक औरत आई। उस ने कहा कि मेरा पति मर गया है। मैं गर्भवती हूँ। क़ुरआन करीम की दृष्टि से मामला हल करना और फ़िक़्ही मसाइल भी यह हल किया करते थे तो बहरहाल गर्भवती औरत आई। उसने कहा कि मेरा पति मर गया है। अब बच्चा पैदा हुआ है। जब फ़ौत हुआ गर्भवती थी अब बच्चा पैदा हो गया है परन्तु इद्दत के दिन अभी पूरे नहीं हुए जो पती के फ़ौत होने वाली औरत के लिए चार महीने दस दिन की इद्दत है वे पूरी नहीं हुई परन्तु मैं गर्भ से थी और इस से पहले मेरा वह बच्चा हो गया है। इस अवस्था में आप क्या फ़रमाते हैं ? क्या मैं इद्दत अभी पूरी करूँ या यह काफ़ी है? हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि निर्धारित समय तक रुकी रहो। अर्थात एक विधवा औरत के लिए इद्दत की जो निर्धारित समय सीमा है उस को पूरा करो। वह हज़रत उमर रज़ि के पास से हज़रत उबय्य रज़ि के पास आई और उनसे मसला पूछा। हज़रत उमर रज़ि से फ़तवा पूछने का हाल बयान किया और जो हज़रत उमर रज़ि का जवाब था वह हज़रत उबय्य रज़ि को बताया। हज़रत उबय्य रज़ि ने कहा कि जाओ और हज़रत उमर रज़ि से कहना कि उबय्य कहता है कि औरत हलाल हो गई अर्थात इद्दत की ज़रूरत नहीं है। अगर वह मेरे बारे में पूछें तो मैं यहीं बैठा हुआ हूँ आकर बुला लेना। वह औरत हज़रत उमर रज़ि के पास गई। हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि हज़रत उबय्य रज़ि को बुला के लाओ। हज़रत उबय्य रज़ि आए। हज़रत उमर रज़ि ने पूछा आप ने यह कहाँ से कहा है? उबय्य रज़ि ने जवाब दिया क़ुरआन से और यह आयत पढ़ी।

وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ

और जहां तक गर्भवती का सम्बन्ध है उनकी इद्दत बच्चा होना है। इस के बाद कहा जो गर्भवती विधवा हो गई हो वह भी इस में दाख़िल है और मैं ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस के बारे में हदीस सुनी है। हज़रत उमर रज़ि ने औरत से कहा कि जो यह कह रहे हैं इस को सुनो अर्थात यह ठीक है। जिस तरह हज़रत उबय्य रज़ि कहते हैं इस पर अनुकरण करो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा हज़रत अब्बास रज़ि का घर मस्जिद नब्वी से जुड़ा था। हज़रत उम्र रज़ि ने मस्जिद को बड़ा करना चाहा तो हज़रत अब्बास रज़ि से कहा कि अपना मकान बेच दें मैं इस को मस्जिद में शामिल करूँगा। हज़रत अब्बास रज़ि ने कहा यह नहीं होगा। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया अच्छा तो तोहफा दे दो। अब्बास रज़ि ने इस से भी इन्कार कर दिया। वह अपनी इच्छा के बड़े मालिक थे। हज़रत उम्र रज़ि ने फ़रमाया अच्छा आप रज़ि ख़ुद मस्जिद को बड़ा कर दें। चलें अपनी तरफ़ से यह कर दें। आपकी तरफ़ से अच्छा gesture हो जाएगा। और उम्मत के लिए मस्जिद बड़ी होगी अपना मकान इस में दाख़िल कर दें। उस पर भी हज़रत अब्बास रज़ि ने कहा यह भी नहीं होगा। उस पर भी वह राज़ी नहीं हुए। हज़रत उमर रज़ि ने कहा इन तीन बातों में से कोई एक बात आप को माननी होगी। हज़रत अब्बास रज़ि ने कहा में एक भी नहीं मानूँगा। आख़िर दोनों ने हज़रत उबी बिन कअब रज़ि को अपना हक्म बना लिया। हक्म तक बात पहुंची। हज़रत उबय्य रज़ि ने हज़रत कहा: बिना रज़ामंदी के आप को उनकी चीज़ लेने का क्या हक़ है। हज़रत उबय्य रज़ि ने कहा कि नहीं। आप नहीं ले सकते। हज़रत उम्र रज़ि ने उबय्य रज़ि से पूछा इसके बार में क़ुरआन मजीद की दृष्टि से हुक्म निकाला है या हदीस से। हज़रत उबय्य रज़ि ने कहा कि हदीस से और वह यह है कि हज़रत सुलेमान ने जब बैतुल-मुक़द्दस की इमारत बनवाई तो इस की एक दीवार जो किसी दूसरे की ज़मीन पर बनवाई थी गिर पड़ी। हज़रत सुलेमान के पास वह्य आई कि इस से आज्ञा लेकर बनाएँ। बात सुनी तो हज़रत उमर रज़ि इस पर ख़ामोश हो गए परन्तु बहरहाल हज़रत अब्बास रज़ि का इख़्लास तथा वफ़ा तो था। बहरहाल ख़िलाफ़त के लिए बैअत का वादा भी था तो वह ख़्याल भी अपनी तबीयत पर छा गया और एक दफ़ा इन्कार तो कर

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

“अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।”

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

चुके थे परन्तु बहरहाल अब नेकी और तक़्वा तो था ही ना और धर्म की ग़ैरत भी थी और ख़िलाफ़त का सम्मान भी था। बहरहाल फिर ज़ाहिर हो गया। जब हज़रत उमर रज़ि ख़ामोश हो गए तो फिर उन्होंने हज़रत उमर रज़ि से कहा कि अच्छा मैं इस को, अपने मकान को मस्जिद में शामिल करता हूँ।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 155प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत उमर रज़ि ने एक बार इरादा किया कि हज तमत्तुअ से लोगों को रोक दें। तीन किस्म के हज होते हैं। कुछ नौजवानों को भी शायद नहीं पता हो। हज तमत्तुअ होता है कि उमरा का एहराम बांध के मक्का पहुंचते हैं और पहले उमरा करते हैं फिर एहराम खोल देते हैं फिर आठवीं ज़िल-हज्जा को नया एहराम बाँधते हैं फिर हज करते हैं यह हज्ज तमत्तअ है। और आम जो हज है वह हज्ज मुफ़रद है जो प्राय होता है और किरान जो है वह यही है कि उमरा और हज एक ही एहराम में हो जाता है। बहरहाल हज़रत उमर रज़ि ने हज्ज तमत्तअ से रोका। हज़रत उबय्य रज़ि ने कहा कि इस को रोकने का आप को कोई अधिकार नहीं है। हज़रत उमर रज़ि को रोक दिया कि यह नहीं हो सकता। यह ग़लत है। बहरहाल फिर हज़रत उमर रज़ि ने नहीं किया। फिर एक बार हज़रत उमर रज़ि ने इरादा किया कि हिरा कूफ़ा से तीन मील की दूरी पर नजफ़ के इलाक़े में एक शहर है वहां के कपड़े पहनने से मना करें। हज़रत उमर रज़ि ने इरादा किया क्योंकि इस रंग में पेशाब की मिलावट होती है या हो सकता है वह रंग काटने के लिए किसी जानवर का पेशाब मिलाया जाता हो तो बहरहाल हज़रत उबय्य रज़ि ने कहा उस के भी आप करने के अधिकारी नहीं हैं। कहते हैं क्योंकि ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस रंग के कपड़े को पहना है और वहां के लिबास को पहना है और हम लोगों ने भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में पहना है और कभी एतराज़ नहीं हुआ इसलिए इस पर हज़रत उमर रज़ि ख़ामोश हो गए। उन्होंने कहा ठीक है। आप रज़ि ठीक कहते हैं।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3पृष्ठ 156 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

(मुअजमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 328) (उद्धरित फ़िक़्ह अहमदिया भाग 1 पृष्ठ 335-336)

एक बार हज़रत उमर रज़ि की ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत उमर रज़ि और हज़रत उबय्य रज़ि में एक बाग़ के बारे में मतभेद हो गया। हज़रत उबय्य रज़ि रोने लगे और कहा कि आप के ज़माना में ये बातें? हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया मेरी नीयत यह नहीं थी। आप का जिस मुसलमान से जी चाहे फ़ैसला करवा लें। मेरे और आपके मध्य मतभेद तो है मैं फैसला नहीं दे रहा। फ़ैसला करवा लें क्योंकि मैं समझता हूँ कि मेरी राय ठीक है तो उबय्य रज़ि ने ज़ैद बिन साबित का नाम लिया कि उनसे फ़ैसला कराते हैं। हज़रत उमर रज़ि राज़ी हो गए और हज़रत ज़ैद रज़ि के सामने मुक़द्दमा पेश हुआ। यद्यपि हज़रत उमर रज़ि इस्लाम के ख़लीफ़ा थे परन्तु एक पक्ष की हैसियत से हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि के इज्लास में हाज़िर हुए। हज़रत उमर रज़ि को उबय्य रज़ि के दावा से इन्कार था। हज़रत उमर रज़ि ने उनसे कहा कि आप भूलते हैं। सोच के याद करें। हज़रत उबय्य रज़ि कुछ देर सोचते रहे फिर कहा मुझे कुछ याद नहीं आता तो ख़ुद हज़रत उमर रज़ि ने घटना की अवस्था वर्णन की और सारा विस्तार वर्णन किया कि इस तरह इस तरह हुआ था। हज़रत ज़ैद रज़ि ने हज़रत उबय्य रज़ि से पूछा कि आप जो अपनी मांग कर रहे हैं उस के लिए आप के पास सबूत क्या है? उन्होंने कहा कुछ नहीं। बोले सबूत कोई नहीं है। उन्होंने सिर्फ़ ये कहा कि सबूत तो कोई नहीं। इस वक़्त आप अमीर-उल-मोमिनीन से क़सम न लीजिए। कुछ नहीं सबूत तो कोई नहीं है परन्तु बोले आप अमीरुल मोमनीन से "क़सम न लीजिए।" हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया अगर मुझ पर क़सम ज़रूरी है तो मुझे इस में भी कोई शंका नहीं है लेनी है या नहीं लेनी। तो बहरहाल उस के बाद वह फ़ैसला हो गया जो भी था।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3पृष्ठ 145-145 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि ने क़ुरआन जमा करने में क़ुरैश और अन्सार के बारह आदमियों का चयन किया जिनमें हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि भी थे।

(अत्तबकातुल क़ुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 381 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

हज़रत उसमान रज़ि के ज़माना में क़ुरआन मजीद में उच्चारण का मतभेद सारे देश में आम हो चुका था। इस कारण से आप ने इस मतभेद को मिटाना चाहा और ख़ुद क़िरअत वालों को मंगवा कर हर व्यक्ति से अलग-अलग क़िरअत सुनी। हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि ,हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि और हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि सब के उच्चारण में मतभेद नज़र आया। यह देखकर हज़रत उसमान रज़ि ने फ़रमाया कि मैं सारे मुसलमानों को एक शब्द के क़ुरआन पर जमा करना चाहता हूँ। क़ुरैश और अन्सार में बारह व्यक्ति थे जिनको क़ुरआन पर पूरा उबूर था। हज़रत उसमान रज़ि ने उन लोगों को यह प्रमुख काम सुपर्द फ़रमाया और हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि को इस मज्लिस का रईस निर्धारित किया। आप अर्थात हज़रत उबय्य रज़ि क़ुरआन के शब्द बोलते जाते और हज़रत ज़ैद रज़ि लिखते जाते थे। आज क़ुरआन मजीद के जितनी प्रतियां मौजूद हैं वह हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि की क़िरअत की हैं।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 143 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

उतय्यबैन ज़मरह कहते हैं कि मैं ने उबय्य बिन कअब रज़ि से कहा कि आप लोगों को जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा हैं क्या हो गया है कि हम दूर दराज़ से आपके पास आते हैं ताकि आप हमें कुछ कोई ख़बरें और घटनाएं सुनाएँ। कोई बातें बताएं और हमें कुछ सिखाएँ परन्तु जब हम आपके पास आते हैं तो आप लोग हमारी बात को मामूली गिनते हैं मानो कि हमारा आपके नज़दीक कोई सम्मान ही नहीं है, कोई हैसियत नहीं है। इस पर उबय्य बिन कअब रज़ि ने कहा कि अल्लाह की क़सम यदि मैं अगले जुम्अ: तक ज़िन्दा रहा तो इस दिन एक ऐसी बात बताऊँगा कि फिर मुझे पर्वा नहीं कि चाहे तुम मुझे उस के कारण से ज़िन्दा रहने दो या क़त्ल कर दो। जब जुम्अ: आया तो कहते हैं कि मैं मदीना गया और क्या देखता हूँ कि लोग गलियों में मौज दर मौज चल रहे हैं। मैं ने कहा कि इन लोगों को क्या हो गया है? एक व्यक्ति ने कहा कि क्या तुम इस शहर से नहीं हो? मैं ने कहा नहीं । उसने कहा कि आज मुसलमानों के सरदार उबय्य बिन कअब रज़ि फ़ौत हो गए हैं। इस पर यह कहने लगा कि मैं ने फिर कहा अल्लाह की कसम !मैं ने कभी ऐसा दिन नहीं देखा जिसमें इस तरह किसी व्यक्ति की सत्तारी हुई हो।

(तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 380 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

जैसे उस व्यक्ति अर्थात उबय्य बिन कअब रज़ि की सत्तारी हुई है। उन्होंने कहा था कि मैं ऐसी बात बताऊँगा कि पता नहीं तुम मेरे साथ क्या करो इस से लगता तो शायद यही है, रावी का यही अभिप्राय लगता है कि अल्लाह तआला ने हज़रत उबय्य रज़ि को इस बात के इज़्हार से बचा लिया जिस को वह दिल की ख़ुशी से बयान नहीं करना चाहते थे। बाक़ी अल्लाह बेहतर जानता है कि इस वाक्य से क्या अभिप्राय है। बहरहाल उसने उनकी वफ़ात का सुनकर यह वाक्य बोला कि मैं ने कभी ऐसा दिन नहीं देखा जिसमें इस तरह किसी व्यक्ति की सत्तारी हुई हो

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

जैसे इस व्यक्ति अर्थात उबय्य बिन कअब रज़ि की सत्तारी हुई है।

हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि से रिवायत है कि मैं आठ रातों में क़ुरआन करीम का दौर मुकम्मल कर रहा हूँ।

(तबक़ात क़ुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 379 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

हज़रत उबय्य रज़ि की मुहब्बते रसूल की यह अवस्था था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद नब्वी के स्तूनों में से खजूर के एक तने के साथ खड़े हो कर ख़ुत्बा दिया करते थे। फिर जब आप के लिए मेम्बर बनाया गया और आप जुम्अ: के दिन इस पर बैठ कर ख़ुत्बा देने लगे तो इस स्तून में से चिल्लाने की आवाज़ आई जिसे समस्त मस्जिद वालों ने सुना। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस स्तून के पास आए और इस पर अपना हाथ रखा। फिर उसे अपने सीने से लगाया तो वह तना उस मासूम बच्चे की तरह रोने लगा जिसे चुप कराया जाता है यहां तक कि उसे क़रार आ गया और आवाज़ आना बंद हो गई। फिर जब मस्जिद गिराई गई और इस में तबदीली कर दी गई तो हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि ने वह तना ले लिया। वह उनके पास था सिर्फ इस कारण से कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के साथ टेक लगा कर खड़े होते थे तो वह तना ले लिया। उस को अपने घर ले गए यहां तक कि पुराना हो गया। दीमक ने इस को खा लिया। कण कण हो गया। परन्तु उन्होंने इस को इस मुहब्बत की कारण से अपने पास रखा। यह मस्नद अहमद बिन हंबल की रिवायत है और कुछ हिस्सा इस में सही बुख़ारी का भी है।

(मसनद अहमद बिन हंबल मसनद अलमुकस्सरीन मिन अस्सहाब, मसनद जाबिर बिन अब्दुल्लाह, हदीस नम्बर 14075)

(सही बुख़ारी किताबुल बाब अन्नजार हदीस नम्बर 2095)

(सुनन इब्न माजा किताब इकामतुस्सलात वस्सुनत फ़ीहा बाब मा जाआ फ़ी बदअ हदीस 1414)

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 158 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में छ: क़ाज़ी थे हज़रत उमर रज़ि, हज़रत अली रज़ि, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि, हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि, हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि और हज़रत उबय्य बिन कअब रज़ि।

(उसदुल ग़ाबह भाग 1 पृष्ठ 170 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2016 ई)

समुरह बिन जुनदुब रज़ि बड़े रुतबे के सहाबी थे। वह नमाज़ में तक़बीर कहने और सूरत पढ़ने के बाद ज़रा ठहरा करते थे। अल्लाहु-अकबर कह के कुछ देर ख़ामोश रहते थे फिर सूरा फ़ातिहा पढ़ते थे। लोगों ने उन पर एतराज़ किया। उन्होंने हज़रत उबय्य रज़ि की सेवा में लिख कर भेजा कि इस के बारे में लिख कर फ़रमाऐं कि हक़ीक़त क्या है। हज़रत उबय्य रज़ि ने निहायत संक्षिप्त जवाब लिखा और लिखा कि आपका तरीक़ा शरीयत के अनुसार है। यह जो ठहराव आप देते हैं इस में कोई हर्ज नहीं। यह शरीयत के अनुसार है और जो आरोप लगाने वाले हैं, एतराज़ करने वाले हैं वे ग़लती हैं।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3पृष्ठ 154 प्रकाशन दारुल इशाअत, उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत सोवैद बिन ग़फ़ला, ज़ैद बिन सौजान और सुलैमान बिन रबी के साथ किसी जंग में गए थे। उज़ैब स्थान पर कोड़ा पड़ा हुआ था। उज़ैब बनू तमीम की एक वादी है और क़ादसिया और मुग़ीसह के मध्य पानी की एक जगह है जो क़ादसिया से चार मील की दूरी पर है। बहरहाल सोवैद ने उसे उठा लिया। कोड़ा पड़ा था। इन लोगों ने कहा कि उसे फेंक दो, शायद किसी मुसलमान का हो। उन्होंने कहा मैं हरगिज़ नहीं फेंकूँगा। पड़ा रहेगा तो भेड़िए उस को खा लेंगे। उनकी ख़ुराक़ बन जाएगा। इस से बेहतर है कि मैं उसे काम में लाऊँ। इस से कुछ दिनों बाद सोवैद हज के इरादा से रवाना हुए। रास्ते में मदीना पड़ता था। हज़रत उबय्य रज़ि के पास गए और कोड़े वाली घटना बयान किया। हज़रत उबय्य रज़ि ने कहा कि इस किस्म की घटना मुझे भी आ चुकी है। मैं ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में सौ दीनार पाए थे। अब चाहे वह कोड़ा है या सौ दीनार हैं हर एक की अपनी अपनी दृष्टि से एक वैल्यू (value) है वह अमानत ही है। अब आगे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह सुनें। हज़रत उबय्य रज़ि कहने लगे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया था कि साल भर तक लोगों को ख़बर करते रहो। बताते रहो। ऐलान कर दो। साल गुज़रने के बाद फ़रमाया रुपए की संख्या का निशान इत्यादि याद रखना और एक साल और प्रतीक्षा करना। यदि कोई निशान के अनुसार मांगता है तो उस के हवाले करना वर्ना वह तुम्हारा हो चुका।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 156प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 197)

अर्थात पूरे दो साल। कोई भी चीज़ मिले तो एक साल ऐलान करो, एक साल तक उस की निशानियां याद रखो और अगर कोई मांग करे तो दे दो।

एक व्यक्ति मस्जिद में किसी गुम हुई चीज़ पर शोर कर रहा था, ऐलान कर रहा था मेरी अमुक़ चीज़ गुम गई है। हज़रत उबय्य रज़ि ने देखा तो ग़ुस्से हुए। उसने कहा कि मैं ने मस्जिद में कोई व्यर्थ बात तो नहीं की। उन्होंने कहा यह ठीक है परन्तु यह बात भी मस्जिद के शिष्टाचार के विरुद्ध है कि यहां किसी दुनियावी चीज़ का ऐलान किया जाए।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 157 प्रकाशन दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची)

हज़रत उबय्य रज़ि की वफ़ात के साल में विभिन्न रिवायतें मिलती हैं। एक रिवायत के अनुसार हज़रत उबय्य रज़ि की वफ़ात हज़रत उमर रज़ि के ख़िलाफ़त के ज़माना में 22 हिज्री में हुई जबकि एक दूसरी रिवायत के अनुसार हज़रत उसमान रज़ि के ख़िलाफ़त के ज़माना में 30 हिज्री में हुई और यही अधिक दरुस्त बात है क्योंकि हज़रत उसमान रज़ि ने हज़रत उबय्य रज़ि के ज़िम्मा क़ुरआन जमा करने का काम सपुर्द किया था।

(तबक़ातुल क़ुबरा भाग 3 पृष्ठ 381 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई) (अल-असाबा भाग 1 पृष्ठ 35-36 प्रकाशन दारुल फ़िक्र बेरूत 2001 ई)

हज़रत उबय्य रज़ि की सन्तान में तुफ़ैल और मुहम्मद थे और उन बच्चों की माता का नाम उम्मे तुफ़ैल पुत्री तुफ़ैल था। वह क़बीला दौस से सम्बन्ध रखती थीं। हज़रत उबय्य रज़ि की एक बेटी का नाम उम्मे अमरो वर्णन हुआ है

(तबक़ात क़ुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 378 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2017 ई)

यहां उनकी ये घटनाएं समाप्त हुईं।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 3 से 10 नवम्बर 2020 ई पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ 1 का शेष

रखेगा कि (1) मेरे सब काम जायज़ मध्यम से हों। (2) मैं किसी एक स्थान पर पहुंच कर सन्तोष न पा जाऊं बल्कि असीमित तरक़्क़ी की इच्छा मेरे दिल में रहे। (3) और मेरा समय नष्ट न हो बल्कि ऐसे तरीक़ से काम करूँ कि थोड़े से थोड़े समय में हर काम को पूरा कर लूं इसके लक्ष्यों की बुलन्दी और इस के कर्मों की दुरुस्ती और उसकी मेहनत की बाक़ायदगी में क्या शक किया जा सकता है।

मैं समझता हूँ कि यदि मुसलमान इस दुआ को इख़लास से मांगते रहें और उसके अर्थों को याद रखें तो दुआ के रंग में तो जो लाभ होगा वह तो होगा ही उसका जो प्रभाव कुदरती रूप से मुस्लमानों के दिमाग़ पर होगा वह भी कुछ कम सम्मान के योग्य नहीं है।

(तफ़सीर कबीर, भाग 1 पृष्ठ 33 से प्रकाशन कादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 7 बजे "मस्जिद बैयतुल बसीर" में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दफ़्तरी उमूर के पूरा करने में व्यस्त रहे।

आज जुम्अतुल मुबारक का दिन था। जुमअतुल मुबारक के साथ ही "मस्जिद बैयतुल बसीर' का उद्घाटन हो रहा था। जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से बड़ी संख्या में लोगों की जमाअत सुबह से ही मह्दी आबाद पहुंचना शुरू हो गए थे। कई लोगों और फ़ैमिलीज़ बड़ी लंबी दूरी तय करके पहुंची थीं। प्रत्येक की इच्छा थी कि अपने प्यारे आक़ा के अनुकरण में नमाज़ जुम्अ: अदा करने का सौभाग्य पाएं और मस्जिद के उद्घाटन में शामिल हों।

प्रोग्राम के अनुसार 2 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ तशरीफ़ लाए और मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी तख़्ती का अनावरण फ़रमाया। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने एक बड़ी मार्की में तशरीफ़ लाकर ख़ुत्बा जुम्अ: इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बा जुम्अ: 3 बजे तक जारी रहा और सीधा MTA इंटरनेशनल पर Live प्रसारित हुआ।

आज अपने आक़ा के अनुकरण में नमाज़ जुम्अ: अदा करने के लिए इर्दगिर्द की जमाअतों से विशेष रूप से सारे जर्मनी से उमूमन अहमदियों की एक भारी संख्या शामिल हुई । हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुम्अ: के साथ नमाज़ अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार सवा 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में 19 फ़ैमिलीज़ के 81 लोगों ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। ये लोग और फ़ैमिलीज़ मह्दी आबाद के अतिरिक्त जर्मनी की निम्नलिखित छ: जमाअतों से अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए आए थे।

Hamburg, Vechta, Lbeck, Lneburg, Bremen, Pinneberg इसके अतिरिक्त स्वीडन में पाकिस्तान से विज़िट पर आने वाले एक मुरब्बी सिलसिला ने भी यहां मह्दी आबाद पहुंच कर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाले सभी लोगों ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 7 बजकर पंद्रह मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जमाअत के सेन्टर की इस पुरानी इमारत और दफ़्तरों और मुरब्बी हाऊस का निरीक्षण फ़रमाया और प्रबन्धकों को कई हिदायतों से नवाज़ा।

भूतपूर्व सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी के सम्मान में आयोजन

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बड़ी मार्की में तशरीफ़ ले आए जहां मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी के आधीन प्रबन्ध भूतपूर्व सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी आदरणीय हसनात अहमद साहिब के सम्मान में विदाई आयोजन का प्रबन्ध किया गया था। इस आयोजन में समस्त भूतपूर्व सदरान मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी, नेशनल मज्लिस आमला ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी और समस्त कायदीन मजालिस और ख़ुद्दामुल अहमदिया के अन्य उहदेदारान शामिल हुए।

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय हम्माद अहमद साहिब मुहतमिम उमूमी ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी ने की। इसके बाद आदरणीय हन्नान अहमद बाजवा साहिब नायब क्षेत्रीय क़ायद ख़ुद्दामुल अहमदिया हिमबर्ग ने ख़ुश-अल्हानी से मंज़ूम कलाम प्रस्तुत किया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया।

तशह्हुद और ताव्वुज़ के बाद हुज़ूर अनवर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आज का यह आयोजन जाने वाले सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया के सम्मान में है। उन्होंने सदारत का छ: साल का अपना दौर पूर्ण किया, यद्यपि कि अभी ख़ुद्दामुल अहमदिया में हैं। और पिछले साल से मौजूदा सदर को सदारत का काम सँभाले हुए एक साल हो चुका है। ख़ुद्दामुल अहमदिया में काम करने वाले अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दुनिया के हर देश में बड़ा अच्छा काम करने वाले हैं। जाने वाले सदर साहिब को मैं केवल यह कहूँगा कि अब भी जो कई जमाअत की ज़िम्मेदारियाँ उन पर डाली गई हैं इन जमाअत की ज़िम्मेदारियों की कारण से उनमें एक सेवक की हैसियत से पहले जो सेवा की एक भावना थी वह ख़त्म नहीं हो जानी चाहिए। यह न समझें कि कई उहदे उनको मिल गए तो उहदे की कारण से मेरा कोई ऊंचा मक़ाम हो गया है। बल्कि हर ओहदेदार को यह समझना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "सय्यदुल क़ौम ख़ादिमहुम" कि क़ौम का सरदार उसका सेवक होता है। यह रूह यदि हमारे हर ओहदेदार में पैदा हो जाए तो एक इन्क़िलाब पैदा हो सकता है। नज़्में आप पढ़ते हैं। जोश वाली तक़रीरें भी कर लेते हैं। बड़े इज़हार भी कर लेते हैं। तराने भी पढ़ लेते हैं। परन्तु व्यवहार में लाभ उसी समय होता है जब आपकी सोच आपके उन शब्दों का साथ दे रही हो। आपका अनुकरण आपके उन शब्दों का साथ दे रहा हो। अत: आने वाले सदर को भी ध्यान रखना चाहिए और जिसे एक लंबा समय सेवा करने का अवसर मिला और दूसरा स्थान सेवा का अवसर मिल रहा है उसको भी याद रखना चाहिए और हर उहदेदार को अमीर से ले के निचली सतह तक प्रत्येक को याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला का यह फ़ज़्ल है कि वह सेवा धर्म की तौफ़ीक़ प्रदान फ़र्मा रहा है और यह किसी का कोई हक़ नहीं है। अत: इस फ़ज़्ल को हमेशा रखें।

कायदीन भी यहां बैठे हैं उनको भी ख़ुद्दामुल अहमदिया के हवाले से बता दूं कि ख़ुद्दामुल अहमदिया का एक काम, बहुत बड़ा काम ख़िलाफ़त अहमदिया की सुरक्षा भी है और इसके लिए वह अह्द भी करते हैं। और हिफ़ाज़त यह नहीं है कि केवल उमूमी की डयूटी दे दी या हिफ़ाज़त ख़ास, की डयूटी दे दी। यह काम तो और दूसरे भी कर सकते हैं। असल हिफ़ाज़त यह है कि समय के ख़लीफ़ा के शब्दों को फैलाया जाए। उन पर अनुकरण किया जाए। इन पर अनुकरण करवाया जाए। और नई नस्ल को सँभाला जाए। केवल यह दावा कर लेना काफ़ी नहीं कि हम दाएं भी लड़ेंगे और बाएं भी लड़ेंगे और आगे भी लड़ेंगे और पीछे भी लड़ेंगे। यह लड़ाई का तो विषय नहीं है। आजकल की लड़ाई, आजकल का जिहाद यह है कि बातों पर अनुकरण किया जाए। और यही वह असल काम है जो ख़ुद्दामुल अहमदिया ने करना है। हर क़ायद का काम है, हर ज़ईम का काम है, हर नाज़िम का काम है, हर मुहतमिम का काम है और सदर साहिब का काम है। अत: इस बात को हमेशा याद रखें कि जो बातें कही जाती हैं। आप तक़रीर में सुनते हैं या जो ख़ुत्बों में सुनते हैं उन पर अनुकरण करें और उन पर अनुकरण करवाएं। अपनी उदाहरणें प्रस्तुत करेंगे तो दूसरे भी इस पर अनुकरण करने की कोशिश करेंगे।

मुझे याद है मेरी ख़िलाफ़त के शुरू में मुबश्शिर अय्याज़ साहिब ने मुझे लिखा कि खलीफ़ा के ख़ुत्बों और तक़रीर का मजमूआ प्रकाशित होता है। और उनके जाने के बाद प्रकाशित होता है जबकि उनकी ज़िन्दगी में होना चाहिए। इसलिए उन्होंने लिखा, अपनी इच्छा का इज़हार किया कि मेरी इच्छा है कि ख़िलाफ़त ख़ामसा के दौर के जो मेरे ख़ुत्बे हैं वे साथ साथ हर साल प्रकाशति होते रहें। मैंने आज्ञा दे दी और बात भी यही ठीक है। अल्लाह तआला ने जमाअत अहमदिया के ख़ुलफ़ा में, और आगे भी इंशा अल्लाह ख़ुलफ़ा आते रहेंगे, प्रत्येक का एक दौर रखा हुआ है। और हर दौर के अनुसार ख़ुद रहनुमाई फ़रमाता रहता है। और जो मौजूदा समय की मांग हैं उसके अनुसार समय के ख़लीफ़ा रहनुमाई करता है। इसलिए वह दौर जब ख़त्म हो जाए और जब नए ख़लीफ़ा का इंतिख़ाब हो जाए और नए ख़लीफ़ा को अल्लाह तआला यह सम्मान प्रदान फ़र्मा दे तो फिर उसके अनुसार ही चलना होगा जिस तरह वह रहनुमाई करे न कि पुरानी किताबें प्रकाशित करने से। ठीक है कई तारीख़ी चीज़ें भी उनमें मिल जाती हैं। कई इल्मी बातें भी मिल जाती हैं। वे प्रकाशित होनी चाहिऐं। परन्तु अनुकरण के लिए ज़रूरी है कि समय के ख़लीफ़ा की बात को सुनो। इस पर अनुकरण करो। न यह कि इस से इच्छा यह थी या वह था। कई लोग आपस में जब बात कर रहे हों तो उहदेदारों की तरफ़ से यह होता है कि नहीं समय के ख़लीफ़ा ने जो यह शब्द कहे तो उनकी इच्छा यह थी। यदि इच्छा यह थी या वज़ाहत की ज़रूरत है तो समय के ख़लीफ़ा मौजूद है उस से पूछो। और यदि भूतपूर्व

ख़लीफ़ा की बातें थीं और उनकी इच्छा यह थी तो इसका फैसला करना भी समय के ख़लीफ़ा का काम है कि इस बात की क्या व्याख्या होगी या हज़रत मसीह मौऊद के हवाले हैं या उनकी बातें हैं तो इसकी क्या स्पष्टता होगी। यह काम हर ओहदेदार का नहीं है। यह बातें कि इसकी व्याख्या क्या होनी है यह फ़ैसला करना समय के ख़लीफ़ा का काम है। इसलिए ख़ुद्दामुल अहमदिया हमेशा याद रखे, हर ओहदेदार हमेशा याद रखे कि आपने समय के ख़लीफ़ा के शब्दों को देखना है, उसकी बातों को सुनना है। और इस पर अनुकरण करने की कोशिश करनी है। और पुरानी इच्छा और पुरानी बातें खंगालने की कोई ज़रूरत नहीं।

अल्लाह तआला जब तक बेहतर समझता है एक ख़लीफ़ा को ज़िन्दगी देता है और उसके काम को जारी रखता है। और जब वह बेहतर समझता है तो एक दौर ख़त्म हो जाता है और अगला दौर शुरू हो जाता है। इसलिए इस बात को, इस हक़ीक़त को समझने की प्रत्येक ओहदेदार को कोशिश करनी चाहिए। और ख़ुद्दामुल अहमदिया का ख़ासतौर पर यह काम है कि जब ख़िलाफ़त के निज़ाम की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी उन पर है तो सुरक्षा इसी तरह है कि अपने नौजवानों में, अपने बच्चों में यह भावना पैदा करें कि तुमने समय के ख़लीफ़ा की बातों को सुनना है और उन पर अनुकरण करना है। और यही हक़ीक़त है जो ख़िलाफ़त की सुरक्षा का योग्य बनाती है वर्ना उसके अतिरिक्त सब बातें ही हैं। अत: मैं दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला आप लोगों को सामर्थ्य प्रदान फरमाए कि वास्तविक रंग में ख़िलाफ़त की सुरक्षा करने वाले हूँ। और समय के ख़लीफ़ा के वास्तविक मददगारों में से हों, सुल्ताने नसीर हों। और ख़िलाफ़त अहमदिया की जो प्रणाली है उसकी वास्तविक रंग में सुरक्षा करने वाले हों और वह यही है जैसा कि मैंने कहा कि समय के ख़लीफ़ा के शब्दों पर अनुकरण हो और अनुकरण करवाने की कोशिश हो और इसको फैलाया जाए। अल्लाह तआला आपको इस का सामर्थ्य प्रदान फ़रमाए।

ख़िताब के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इसके बाद शामिल होने वालों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ खाना खाया।

आमीन का आयोजन

इस प्रोग्राम के बाद 8 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ "मस्जिद बैयतुल बसीर' तशरीफ़ ले आए जहां आमीन का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने निम्मलिखित 29 बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिय तंज़ील अहमद मलिक, तौहीद नूरुद्दीन, साक़िब अहमद जाएद, अदील अहमद, बासिल फ़ातिह अहमद, अताउल ख़बीर अहमद, समर अहमद, मलिक साहिल अहमद, हस्सान अहमद क़मर, मलिक हसीब खोखर, फ़ख़र सरोश अहमद, मिर्ज़ा मुनीब अहमद, मुवह्हिद अहमद, अब्दुल-ग़फ़ूर अलीम राना, अरमान नसीरुद्दीन, सदीद अहमद, अदील एहसान खोखर। प्रिया अरविश नादिया राना, ईमान अख़्तर, नूरम जब्बार, सायरा मलिक, सलमा अहमद, अरोसा क़मर, माहीन अरशद, सतवत अहमद, महवश अरशद, हिरा चौधरी, दिया खोखर, अबीरा कमाल

आमीन के आयोजन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

26 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक हफ़्ता)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 7 बजे मस्जिद बैयतुल बसीर महदी आबाद में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तर की डाक, पत्र और रिपोर्टें देखीं और हिदायतों से नवाज़ा।

प्रोग्राम के अनुसार ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमली मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज सुबह के इस सैशन में 40 फ़ैमिलीज़ के 141 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ जर्मनी की विभिन्न 22 जमाअतों से आई थीं। इस के अतिरिक्त अज़ेंबलजीम से आने वाली एक फ़ैमली ने भी मुलाकात का सौभाग्य पाया।

मुलाक़ात करने वाले इन सभी लोगों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेह करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाए। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 1 बजकर 20 मिनट तक जारी रहा।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर मस्जिद बैयतुल बसीर के बाहरी सेहन में Ornamentel Cherry का एक पौधा लगाया। इस पौधे को Japanese Cherry Blossom का नाम भी दिया जाता है। इसके बाद तस्वीरों का प्रोग्राम हुआ। निम्नलिखित ग्रुपों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया।

मज्लिस आमला जमाअत महदी आबाद। * ग्रुप मेंबरान जमाअत जिन्होंने वकारे अमल करने की तौफ़ीक़ पाई। * मज्लिस आमला जमाअत Badsege Berg MTA जर्मनी की टीम MTA इंटरनेशनल की टीम। * मीडिया ऐंड प्रैस। * मेंबरान क़ाफ़िला हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़। *ज़याफ़त विभाग के काम करने वाले। * क़ाफ़िला के कुछ मेंबर रह गए थे, हुज़ूर अनवर ने स्नेह करते हुए दोबारा क़ाफ़िला के मेंबरों को तस्वीर बनवाने का सौभाग्य प्रदान फ़रमाया। * मख़ज़ने तसावीर विभाग। *मुलाक़ात विभाग के काम करने वाले।

तस्वीरों के इस प्रोग्राम के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ स्नेह करते हुए किचन में तशरीफ़ ले आए। काम करने वालों दोपहर का खाना तय्यार कर रहे थे। हुज़ूर अनवर ने स्नेह करते हुए काम करने वालों से गुफ़्तगु फ़रमाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर स्टोर में तशरीफ़ लाए जहां खाना पकाने और कई दूसरी ज़रूरतों के लिए चीज़ें स्टोर की गई थीं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ लज्ना के क्षेत्र में तशरीफ़ ले गए। लजना के लिए अलग मार्कीज़ लगा कर प्रबन्ध किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को अचानक अपने मध्य देखकर औरतों की ख़ुशी और भावनाएँ वर्णन के बाहर थीम। लजना की मार्की के अतिरिक्त हुज़ूर अनवर मस्जिद में औरतों के हाल में भी तशरीफ़ ले गए।

महदी आबाद की इस ज़मीन पर जहां मस्जिद और जमाअत का सैंटर स्थित है। इस ज़मीन के एक हिस्सा को विभिन्न प्लॉट्स में बांटा गया है ताकि लोग यह स्थान प्राप्त करके अपने घर बनाने का कार्य कर सकें। इस स्थान पर एक दोस्त अज़ीम बट साहिब का घर बन रहा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ स्नेह करते हुए इस बने रहे घर के अंदर तशरीफ़ ले गए और घर का नक़्शा देखा और इस हवाला से अज़ीम बट साहिब से विभिन्न बातें पूछीं ।

इसके बाद दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने "मस्जिद बैयतुल बसीर" तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद रिहायश गाह की तरफ़ जाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेह करते हुए आदरणीय हबीबउल्लाह तारिक़ साहिब की नई अटालीयन गाड़ी का निरीक्षण फ़रमाया। हुज़ूर अनवर स्नेह करते हुए कुछ देर के लिए गाड़ी में तशरीफ़ फ़र्मा रहे और इस गाड़ी की विशेषताओं के हवाला से विभिन्न बातें पूछते रहे। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद बैयतुल बसीर के आयोजन उद्घाटन

आज प्रोग्राम के अनुसार मस्जिद बैयतुल बसीर महदी आबाद के उद्घाटन के एक आयोजन का एहतिमाम मस्जिद के सेहन में लगाई गई मार्की में किया था। 4 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मार्की मैं तशरीफ़ ले आए। आज के इस आयोजन में शामिल होनेवाले मेहमानों की संख्या 170 थी। जिनमें

Mr.Gero Storjohann मेंबर नैशनल असम्बली, Mrs. Elke Christina लार्ड मेयर आफ़ Norderstedt, Mrs. Kirsten Eickhoff-Weber डिप्टी स्पीकर प्रन्तीय असैंबली, Mr. Tobias von der Heide मेंबर प्रन्तीय असैंबली, Mr. Stefan Weber मेंबर प्रान्तीय असैंबली, Mrs. Karla Frieben-Wischer मेंबर आफ़ मिनिस्ट्री Schleswig, Mr. Manfred Nahe के मेयर, Mr. Marc Andre Ehlers Nahe टाउन के दूसरे मेयर, Mayor Henstedt--Ulzburg, Mayor Kayhude, Mayor Kisdorf, Mr. Joachim Brunkhorst मेंबर डिस्ट्रिक्ट पार्लेमंट, Mr. Claus

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 19 November 2020 Issue No.47

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

Peter Dieck प्रैज़ीडैंट डिस्ट्रिक्ट पार्लियामेंट, Bad Segeberg

इसके अतिरिक्त डिस्ट्रिक्ट पार्लियामेंट के तीन चेयरमैन, क्षेत्र के पादरी, हैडाफ़ स्टेट Chancellery प्रोफ़ैसर्ज़, डाक्टरज़, टीचर्ज़ और ज़िन्दगी के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल थे।

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय तय्यब सिद्दीक़ साहिब ने की। इसके बाद आदरणीय दानियाल वदूद साहिब ने इसका जर्मन भाषा में अनुवाद किया।

इसके बाद आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब अमीर जमाअत जर्मनी ने अपना परिचयात्मक और स्वागत सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा Nahe क़स्बा की आबादी 2 हज़ार के क़रीब है। इस क़स्बा का इतिहास लगभग 10 हज़ार साल से भी पुराना मालूम होता है।

जमाअत अहमदिया का Nahe में आरम्भ 1980 ई में हुआ। पहले अहमदी Bad Segeberg और Norderstedt के क्षेत्र में रहने लगे। इसके बाद जब जमाअत की संख्या बढ़ती गई तो जमाअत ने अपनी मस्जिद के लिए एक उचित स्थान देखना शुरू किया। जमाअत ने यह मौजूदा स्थान जुलाई 1989 ई में छः लाख मार्क में ख़रीदा था। इसका कुल क्षेत्रफल 42,87 एकड़ है।

अमीर साहिब ने मस्जिद का परिचय करवाते हुए कहा कि14 जून 2011 ई को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस मस्जिद की बुनियाद रखी। बनाने का आरम्भ 2017 ई में हुआ। मस्जिद 395 वर्ग मीटर पर बनी है परन्तु पूर्ण प्लाट इस से बहुत बड़ा है। इस मस्जिद की तीन मंज़िलें हैं। मस्जिद के बनाने में कुल 5 लाख 60 हज़ार यूरो लगे। स्थानीय जमाअत ने इसका तीसरा हिस्सा अदा किया है। इसके बाद Gustav Lnenburg साहिब ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। महोदय lieutenant colonel रहे हैं। उन्होंने सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को मुबारकबाद कहा। इसके बाद महोदय ने कहा

30 साल पहले जब जमाअत ने यह वाला प्लाट ख़रीदा तो मैं अपनी फ़ैमली के साथ उसके साथ ही रहता था। हमें उस समय कुछ भी मालूम न था कि अहमदी मुसलमान कौन होते हैं। आप लोगों का नारा कि "मुहब्बत सबसे और नफ़रत किसी से नहीं" के बारे में सुना तो वो हमें आप लोगों की एक चाल मालूम हो रही थी ताकि लोग यह सुनकर गुमराह हो जाएं। परन्तु आज हम सब इधर जमा हुए ताकि इस मस्जिद का उद्घाटन हो सके। और यह जो एक बहुत ही लंबा समय गुज़रा है इसमें बहुत से द्वेष दूर करने पड़े और विभिन्न नफ़रत फैलाने वाले लोगों के ग़लत प्रोपेगंडा को दूर करना पड़ा। और यह प्रापेगंडा आज के दिन से ख़त्म होता है। अब तो अहमदियों की जो पाकिस्तान से हिजरत करके इधर आए अगली generations इस स्थान पर पैदा हुई हैं, यहां ही उन्होंने शिक्षा प्राप्त की है और यहीं काम करते हैं और वे जर्मन समाज का हिस्सा बन चुके हैं।

महोदय ने और अधिक कहा कि हम सब जर्मन क़ानून का समर्थन करते हैं और क़ानून की इक़दार को सामने रखते हैं। इन इक़दार में से एक यह है कि हर इन्सान को यह हक़ प्राप्त है कि वे अपने विचारों का इज़हार करे और उसे अन्य आज़ादियां उपलब्ध हों। इसी तरह मर्द और औरत का स्थान बराबर होना चाहिए।

महोदय ने कहा कि हमारा सम्पर्क जमाअत के साथ हमेशा अच्छा रहा और हमने हमेशा जमाअत के हक़ में बात की। integration तो एक स्थायी काम है जो हमेशा जारी रखना चाहिए। हमें अहमदियों के साथ रह कर बहुत सी बातें मालूम हुईं और सीखने को मिलीं। हमें यह पता चला कि यह नारा "मुहब्बत सबसे और नफ़रत किसी से नहीं" केवल ऐसे ही व्यर्थ शब्द नहीं बल्कि अहमदियों का अनुकरण भी इसके अनुसार ही है। हमें इस बात का गर्व भी है कि ईसाई होते हुए हमने अपने पड़ोसियों की मुश्किल समय में मदद की। आज के दिन हमें ख़ुशी महसूस भी हो रही है और शुक्रिया अदा भी करना होगा। मुबारकबाद भी प्रस्तुत करनी होगी कि एक इतनी ख़ूबसूरत मस्जिद हमारे पास बनी है। आज का दिन मेरे और मेरी बेगम के लिए एक निहायत ही महत्तवपूर्ण दिन है क्योंकि पहले दिन से इस process में शामिल हैं।

उसके बाद Susanne Hahn साहिबा जो एक evangelical lutheran चर्च की पादरी हैं ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। महोदया ने सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ और अन्य हाज़िरीन को सलाम प्रस्तुत किया और साथ मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से मुबारकबाद प्रस्तुत की।

महोदया ने कहा कि मस्जिद के उद्घाटन तक यह एक निहायत ही लंबा process था। मुझे यहां 5 साल से बतौर पादरी काम करने का अवसर मिल रहा है और हर साल हम अहमदिया मुस्लिम जमाअत के पास अपने नौजवानों के साथ आते हैं। यह एक अवसर होता है ताकि अपने धर्म से हट कर दूसरों के बारह में भी इलम हो। हमेशा आप लोग हम सबसे बहुत ही प्यार से मिलते और हमारा स्वागत करते हैं। नौजवानों को आप लोग अवसर देते हैं कि वे अपने सारे सवाल आप लोगों से कर लें। नौजवानों को अपनी इबादत का तरीक़ा दिखाते हैं जो उन्हें प्रभावित भी करता है।

फिर उन्होंने कहा कि आज के ज़माना में एक ख़ुदा का घर और इबादत-गाह बनाना बहुत अच्छा निशान है। ख़ुदा तआला का ऐसा घर जिसमें समस्त लोग इकट्ठे हो सकें और आपस में बातचीत भी कर सकें। साथ इबादत के लिए भी स्थान हो। हम सब ख़ुदा पर ईमान लाते हैं। एक ख़ुदा जिस ने हमें हमारी ज़िन्दगी प्रदान की जो हमारी सुरक्षा करता है। बेशक विभिन्न रंग में हम उसका इज़हार करते हैं परन्तु फिर भी मिल कर हम इस बात का प्रकाशन करते हैं। और यह बात आज के ज़माना में निहायत ही ज़रूरी है। यह भी ज़रूरी है कि हम समस्त नफ़रतों के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठाएं। यह मस्जिद इन सबके लिए जो इसमें आते हैं बरकत वाली हो।

आख़िर पर महोदया ने कहा कि हमारा काम अब यह है कि हम एक दूसरे की इज़्ज़त करें और यह बात हमेशा सम्मुख रखें कि हम ख़ुदा तआला के ही बंदे हैं और वह ही हमारा सृष्टा है।

उसके बाद Elke Christina Rder साहिबा जो Norderstedt की Lord Mayor हैं ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ और अन्य हाज़रीन को सलाम प्रस्तुत किया और साथ ही इस प्रोग्राम की दावत का शुक्रिया अदा किया। इसी तरह शहर Norderstedt की तरफ़ से सलाम प्रस्तुत किया और मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से मुबारकबाद प्रस्तुत की।

महोदया ने कहा कि बहुत से सालों से आप लोगों ने अपना समय इस काम में व्यतीत किया कि आप लोगों की मस्जिद अच्छी तरह इस स्थान पर बने। आप लोगों के बहुत से मेंबरान ने इसके लिए मेहनत की ताकि यहां इस मस्जिद का क़ियाम हो। इस में Norderstedt के शहरी भी शामिल थे। आप सब उस दिन के प्रतीक्षक थे।

महोदया ने कहा जर्मन में एक मुहावरा है कि जो चीज़ बनने में अधिक देर ले वे अवश्य अच्छी बनती है। तो मेरी इच्छा है कि यह मस्जिद अब अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लिए बहुत अधिक अच्छी साबित हो। यह मस्जिद वह इबादत-गाह हो जिसकी आप लोगों को इच्छा थी। यह मस्जिद ख़ुदा का भय और रुहानी माहौल पैदा करने वाली हो। यह स्थान हमेशा अमन फैलता चला जाए।

महोदया ने कहा कि बहुत समय से आप लोग हमारे समाज में शामिल होकर उसका हिस्सा बने हुए हैं और उसे लाभ भी पहुंचा रहे हैं। आजकल के ज़माना में कुछ ऐसे सियास्तदान और कट्टरवाद धार्मिक लीडर्ज़ मिलते हैं जो इस कोशिश में लगे हुए हैं कि फ़साद पैदा करें और समाज में एकता को तोड़ा जाए और नफ़रत फैलाई जाए। हमारा फ़र्ज़ बनता है कि यह पूरी दुनिया पर स्पष्ट कर दें कि हर हर culture के लोग यहां यदि अमन में रहना चाहते हैं तो हमारे साथ रह सकते हैं। प्यार, मुहब्बत और एक दूसरे का सम्मान बुनियादी बातें हैं ताकि अमन स्थापित किया जा सके और एकता स्थापित रहे। यह हम सबकी इच्छा है कि हम सब अमन तथा प्यार से मिल-जुल कर रहने वाले हों। शुक्रिया

(शेष................)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad